Website : coalfieldmirror.com

कोलफील्ड मिरर

हर पल आपके साथ

कोलकाता | शनिवार 01 मार्च 2025 | वर्ष– 8 | अंक– 1297 | पृष्ठ– 6 | T/WB/2025/0130/2064/1269

चुनाव से पहले ममता की बड़ी तैयारी, आई-पेक से फिर मिलाया हाथ

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (कोलकाता): प्रशांत किशोर (पीके) अपनी अलग पार्टी बनाकर बिहार में सियासत कर रहे हैं. ऐसे में यह सवाल उठ रहे थे कि क्या अगले साल पश्चिम बंगाल में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव में आई-पेक तृणमूल कांग्रेस की मदद करेगी? गुरुवार को ममता बनर्जी ने पार्टी के बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं के साथ नेताजी इंडोर स्टेडियम में बैठक की. इस बैठक में ममता बनर्जी ने संकेत दिया कि टीएमसी आई-पेक का मदद लेती रहेगी.

बता दें कि 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद तृणमूल कांग्रेस ने राज्य में पहली बार आई-पेक के साथ हाथ मिलाया था. यह संगठन 2021 के विधानसभा चुनाव में मतदाता और जांच संगठन के रूप में काम कर रहा है. भ्रष्टाचार के व्यापक आरोपों के बावजूद, तृणमूल कांग्रेस को 2019 के चुनावों में राज्य के अधिकांश हिस्सों में जीतने में कोई कठिनाई नहीं हुई. लेकिन हाल में पार्टी के नेताओं ने सार्वजनिक रूप से आई-पेक के खिलाफ आवाज उठाई है. इस बार राज्य सम्मेलन में ममता बनर्जी ने आई-पेक को लेकर पार्टी की स्थिति साफ की.

कुछ दिन पहले ममता बनर्जी की प्रमुख प्रतीक जैन से मुलाकात की खबर सामने आई-पेक आई थी. फिर चुनाव में आई-पेक के साथ समझौते को लेकर अटकलें बढ़ गईं. हालांकि, गुरुवार को नेताजी इंडोर स्टेडियम से ममता ने जो संदेश दिया, उससे यह स्पष्ट हो गया कि 2026 के विधानसभा चुनाव में भी आई-पेक तृणमूल कांग्रेस के साथ ही रहेगी.

ममता बनर्जी ने राज्य के सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं को मुख्य रूप से 2026 के चुनावों को ध्यान में रखते हुए एक संदेश दिया. उस भाषण के बीच में ममता ने आई-पेक को लेकर बात कही. तृणमूल सुप्रीमो ने कहा कि यह पीके की आई-पेक नहीं है. उन्होंने एक अलग राजनीतिक पार्टी बना ली है. वे एक नई टीम हैं. उन्हें सहयोग करना चाहिए. उन्हें गलत बोलना बंद करें. हम सबको मिलकर यह काम करना होगा.

कुछ महीने पहले ममता बनर्जी ने विधानसभा में पार्टी विधायकों के साथ बैठक में आई-पेक के बारे में टिप्पणी की थी. सूत्रों के अनुसार, उस बैठक में उन्होंने कहा, “मैं पैक-फैक को नहीं जानती हूं. इस वजह से मुझे बहुत सारी गलत जानकारी मिली है. अब से, टीम मेरे पास आने वाली जानकारी के आधार पर आगे बढ़ेगी.

ममता की टिप्पणी से यह अटकलें लगनी शुरू हो गई थी कि आई-पेक और टीएमसी का रिश्ता अब खत्म हो जाएगा. वह उस संगठन को अलविदा कह देंगी. इस बीच, कुछ दिन पहले तृणमूल विधायक मदन मित्रा ने कहा था, आई-पेक ममता बनर्जी की स्वच्छ छवि को धूमिल कर रहा है. हालांकि, इस बार ममता बनर्जी ने आई-पेक को लेकर अपनी स्थिति साफ कर दी है.

पुरुलिया जिले में उच्चतर माध्यमिक परीक्षार्थियों की संख्या घटकर हुई आधी

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (पुरुलिया): 2025 में उच्चतर माध्यमिक परीक्षार्थियों की संख्या लगभग आधी रह गयी है। पिछले साल यानी 2024 में हायर सेकेंडरी परीक्षा के उम्मीदवारों की संख्या 36,656 थी और इस वर्ष, यानि 2025 में उच्चतर माध्यमिक परीक्षार्थियों की संख्या 19,409 है जैसे ही यह आंकड़ा सामने आया, पुरुलिया जिले के निवासी चिंता में पड़ गए। कई लोगों का मानना है कि स्कूल छोड़ने वाले बच्चे इस समस्या का मूल कारण हैं। हालाँकि, संसद इस कारण को स्वीकार करने में अनिच्छुक है।

जिला विद्यालय निरीक्षक (माध्यमिक) महुआ बसाक ने बताया कि 2023 में माध्यमिक परीक्षार्थियों की संख्या कम थी, जिसका असर इस बार उच्च माध्यमिक परीक्षार्थियों पर पड़ा है।

हालांकि, हायर सेकेंडरी परीक्षा के संयुक्त संयोजक सत्य किंकर महतो ने इस मामले में दूसरा स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि पांच साल से अधिक उम्र के छात्रों को प्री-प्राइमरी में दाखिला दिया जा रहा है। यह नियम 2013 में लाया गया था। इसलिए, 2023 में माध्यमिक परीक्षा देने वाले इस वर्ष उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में बैठ रहे हैं, इसलिए संख्या कम हो गई है।

दूसरी ओर, प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश की संख्या में भी काफी गिरावट आई है। उन्होंने यह भी कहा कि 2023 में 29,222 परीक्षार्थी माध्यमिक परीक्षा देंगे, जो 10,000 परीक्षार्थियों की कमी है।

लेकिन पर्षद ने इसे अलग ढंग से समझाया और कहा कि माध्यमिक विद्यालय के बाद, कई लोगों का झुकाव डिप्लोमा, आईटीआई आदि सहित विभिन्न अध्ययनों की ओर अधिक होने लगा है, और परिणामस्वरूप, कई लोग उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने में अपनी रुचि पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

हालांकि, शिक्षा विदों के अनुसार, पारिवारिक कठिनाई के कारण, कई छात्र किराने की दुकानों या मोटरसाइकिल गैराजों में काम करते हैं, जबकि अन्य छात्र काम करने के लिए अन्य राज्यों में चले जाते हैं। कारण यह है कि शिक्षा के बावजूद नौकरी के अवसर लगभग पूरी तरह बंद हैं। ऐसी स्थिति में कई लोगों का मनोबल कमजोर हो गया है।

वहीं दूसरी ओर भाजपा का कहना है कि छात्रों को अपनी राय देनी चाहिए, क्योंकि वे समझते हैं कि पढ़ाई के बाद उन्हें इस राज्य में नौकरी नहीं मिलेगी। यहां तक कि नौकरी पाने के लिए भी नेता और मंत्री भारी रिश्वत मांग रहे हैं।

परिणामस्वरूप, छात्र अपनी क्षमता से अधिक, अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए विभिन्न नौकरियों का सहारा ले रहे हैं। संसद सूत्रों के अनुसार, इस वर्ष उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में कुल 19,656 परीक्षार्थियों में से 9,600 छात्र और 9,809 छात्राएं हैं। परीक्षा केन्द्रों की संख्या 85 है। वहाँ 40 मुख्य स्थल हैं। इसमें 45 उप-स्थल हैं। हालांकि बोर्ड सूत्रों ने बताया कि परीक्षा संपन्न कराने के लिए सभी इंतजाम कर लिए गए हैं।

48 घंटे के अंदर युवक की हत्या मामले में दो बहनों समेत युवक गिरफ्तार

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (पुरुलिया): सदर थाना पुलिस ने एक युवक की हत्या के मामले का 48 घंटे के अंदर खुलासा कर दिया। पुलिस ने दो बहनों और एक अन्य युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपियों को शुक्रवार को पुरुलिया जिला न्यायालय में पेश किया गया।

गौरतलब है कि पिछले मंगलवार को पुरुलिया-कोटशिला शाखा रेलवे लाइन के पुलिया के नीचे से सुरेश सूत्रधर नामक 22 वर्षीय युवक का शव बरामद किया गया था। उसका घर पुरुलिया नगर पालिका के वार्ड नंबर 6 में है। मृत युवक के पिता स्वपन सूत्रधार ने पुरुलिया सदर थाने में हत्या की शिकायत दर्ज कराई थी। घटना की जांच में 48 घंटे के भीतर पुलिस ने पुरुलिया शहर के चूनाभट्टी इलाके से तीन लोगों चुमकी पांडे, उसकी बहन कुमकुम पांडे और इमरान अंसारी को गिरफ्तार कर लिया।

आज सदर थाना पुलिस ने इन तीनों को जिला न्यायालय में पेश किया। सदर थाना पुलिस ने आरोपियों की पुलिस हिरासत की मांग की है। हालाँकि, प्रारंभिक अनुमान यह है कि यह हत्या प्रेम त्रिकोण का परिणाम थी। पूरे मामले की गहन जांच शुरू कर दी गई है।

छाई लदी वाहनों का प्रकोप, प्रदूषण से राहत के नही आसार

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (नियामतपुर): ठंढ के मौसम के बाद गर्मियों में भी लोगों को सड़कों पर उड़ते धूल और हो रहे प्रदूषण से राहत मिलने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। कारण वही स्थितियां अब भी बरकरार हैं।

जानकारों का कहना है कि पहले भी वाहनों पर भीगी हुई सफेद राख लादकर ले जाया जा रहा था जो रास्ते में जहां तहां गिरकर सुख कर वाहनों के आवागमन से उड़कर लोगों की आंखों में पड़कर तकलीफें और सांस लेने में कठिनाइयां दिया करता था। जबकि कारखानों से वाहनों पर लादकर ले जाई जा रही सुखी छाई भी रास्तों में गिरकर भारी प्रदूषण

उत्पन्न करता है।

इधर रास्तों की खराब अवस्था भी कम पीड़ादायक नहीं है। इन उबर खाबड़ रास्तों से गुजरने वाले वाहन एक अजीबो गरीब आवाज के साथ काफी धूल उड़ाते गुजरते हैं। फिलहाल देखा जा सकता है कि इन रास्तों पर चिप्पी लगाकर मरम्मत की कोशिश की जा रही है। लोगों के अनुसार यह और भी खतरनाक स्थिति है। ऐसे रास्तों से आवागमन स्मूथ नहीं होता बल्कि इनसे होकर वाहनों का आवागमन और भी झटकेदार और धूल उत्प्रेरक का काम करता है।

उल्लेखनीय है कि छाई लदी वाहनों के चलने और इनसे हो रही प्रदूषण को लेकर कई बार आवाजें उठाई गई लेकिन प्रशासन के तरफ से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। जिससे आसार ये बनते हैं कि ठंढ तो सारी प्रदूषण झेलते बीत गई अब गर्मी भी यूं भी गुजर जाएगी।

हांलाकि हाल ही में कुल्टी ब्लॉक कांग्रेस सेवादल द्वारा बड़े कदम उठाए जाने की चेतावनी दी गई है। अब देखना है कि सरकार द्वारा कोई कार्रवाई की जाती है या नहीं।

एक गृहिणी पर तेजाब से हमला

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (कोलकाता): उत्तर 24 परगना जिले के खड़दह नगर पालिका के वार्ड नंबर 2 स्थित एलपी कॉलोनी में शुक्रवार दोपहर एक गृहिणी पर अचानक तेजाब से हमला किया गया। आरोप है कि एक पड़ोसी युवक ने अचानक उसके सिर और चेहरे पर तेजाब डाल दिया। शिकायत मिलने पर पहुंची पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर लिया। पीड़िता को बचाकर बैरकपुर बीएन बसु महकमा अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों ने बताया कि उनके बाल और चेहरे का एक बड़ा हिस्सा जल गया है। फिलहाल उनकी हालत गंभीर है।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, पीड़िता और आरोपित दोनों तारक दास नामक व्यक्ति के घर में रहते थे। गृहिणी अपने पति और बच्चे के साथ मकान में किराये के कमरे में रहती है। आरोपित सुजीत कुमार देबनाथ बगल वाले घर में किरायेदार है। आरोप है कि गृहिणी शुक्रवार दोपहर आंगन में काम कर रही थी। तभी बगल के मकान में रहने वाले किरायेदार सुजीत देबनाथ ने अचानक पीछे से गृहिणी के सिर और चेहरे पर तेजाब डाल दिया। एसिड अटैक में गृहिणी का चेहरा और सिर जल गया। जब वह चिल्लाई तो आसपास के कमरों से सभी लोग बाहर आ गए। स्थानीय पार्षद चिन्मय कुमार दास को तुरंत सूचित किया गया। उनके प्रयासों से गृहिणी को बचा लिया गया और गंभीर हालत में उसे बैरकपुर बीएन बसु महकमा अस्पताल में भर्ती कराया गया। पार्षद ने इसकी सूचना थाने को दी। पुलिस तुरंत वहां गई और सुजीत को गिरफ्तार कर लिया। पीड़ित गृहिणी के पति ने सुजीत के खिलाफ थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। हालांकि, परिवार और पड़ोसियों को यह पता नहीं है कि ऐसा क्यों हुआ।

सुजीत और गृहिणी के बीच कोई पुराना रिश्ता या दुश्मनी थी या नहीं, यह कोई नहीं जानता। हालांकि, लोकनाथ चंद्रा नामक एक पड़ोसी का दावा है कि आरोपित लड़का बीमार है और उसे गांजा की लत है। हो सकता है कि नशे में उसने एसिड फेंक दिया हो।

पीड़ित महिला के पति अशोक दास ने कहा कि मैं घर पर नहीं था, काम पर गया था। मेरे भतीजे ने फोन करके मुझे बताया कि ऐसा कुछ हुआ है। मुझे समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों हुआ। हमारा उनसे कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ है।

ट्रिपल मर्डर केस में जिंदा बचे नाबालिग ने खोले राज

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (कोलकाता): टांगरा इलाके में बीते 19 फरवरी को एक मकान में तीन लाशें मिलने से सनसनी फैल गई थी. यह शव दो महिलाओं और एक लड़की के थे. मृतक महिलाएं आपस में जेठानी और देवरानी थीं. वहीं लड़की एक मृत महिला की बेटी थी. आशंका जताई जा रही थी कि तीनों ने सुसाइड किया था. इस घटना से कुछ ही घंटे पहले इसी परिवार के तीन अन्य सदस्य एक कार एक्सीडेंट में घायल मिले थे. वह शहर के एक मेट्रो पिलर से टकरा गए थे. अब इस केस मे नया खुलासा हुआ है. परिवार कर्ज में डूबा हुआ था, सभी परिजनों ने सामूहिक आत्महत्या का प्लान बनाया था.

इस घटना में जिंदा बचे नाबालिग ने चौंकाने वाला बयान दिया है. बच्चे को खीर में नींद की गोली दी गई थी. नींद की गोली का उस पर कोई असर नहीं हुआ. बच्चे ने बताया कि उसके चाचा ने उसे तकिए से दबाकर मारने की कोशिश की थी. नाबालिग ने सांस रोककर मरने का नाटक किया और अपनी जान बचाई. पुलिस इस नाबालिग बच्चे के बयान के आधार पर मामले की जांच कर रही है. वहीं, बाल सुरक्षा आयोग इस नाबालिग के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त व्यवस्था करने में जुट गया है.

कोलकाता के टांगरा इलाके के अटल सुर लेन में प्रणय डे अपनी पत्नी सुदेष्णा और बेटे प्रतीप डे के साथ रहते थे. इसी घर में उनके छोटे भाई प्रसून कुमार डे भी अपनी पत्नी रोमी और बेटी प्रियंवदा के साथ रहते थे. तकरीबन 25 साल पहले, डे परिवार क्रिस्टोफर रोड से टांगरा आकर बस गया था. उनके पिता ने यहां एक प्लॉट खरीदकर अपना मकान बनवया था, जहां दोनों भाइयों के परिवार एक साथ रहते थे.

पड़ोसियों के मुताबिक, परिवार के सदस्यों के बीच कभी कोई बड़ा विवाद सामने नहीं आया. प्रणय और प्रसून एक साथ चमड़े के उत्पादों के निर्माण और

निर्यात का कारोबार करते थे, जिसकी फैक्ट्री कोलकाता के सील लेन में स्थित थी. कोविड-19 महामारी के समय उनके व्यापार को भारी नुकसान हुआ, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति पर बुरा असर पड़ा था.

पुलिस जांच के बाद घटना की हकीकत सामने आई. नाबालिग के परिजनों के ऊपर करोड़ों रुपये का कर्जा हो गया था, जिसके दबाव में परिजनों ने मरने का फैसला लिया. बच्चे ने बताया घटना से दो दिन पहले पापा ने चाचा से कहा था कर्जदार हमारे पीछे पड़े हुए हैं. अब हमारे पास मरने के अलावा कोई रास्ता नहीं है. उसने यह भी बताया कि घटना से पहले घर में बड़ों की एक बैठक हुई थी, लेकिन मुझे वहां से हटा दिया गया था.

लड़के का दावा है कि उसकी बहन की तरह उसे भी खीर में नींद की गोली खिलाई गई थी, लेकिन योग और जिम करने की वजह से उसमें मिली दवा का उस पर कोई असर नहीं हुआ. उसने बताया, चाचा ने तकिए से मेरा गला दबाकर मारने की कोशिश की. लेकिन मैंने सांस रोककर मरने का नाटक किया. इसके बाद चाचा और पापा छत पर आत्महत्या करने चले गए. मैं जब दूसरी मंजिल पर गया तो देखा मां, चाची और बहन मृत पड़ी थीं.

नर्सिंग छात्रा का शव हॉस्टल के कमरे में फंखे से लटका मिला

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (कांकसा): नर्सिंग छात्रा का शव हॉस्टल के कमरे से लटका हुआ बरामद हुआ। खबर मिलते ही मालनदिघी स्थित निजी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भारी हंगामा मच गया। कांकसा थाने से पुलिस पहुंची। पांडवेश्वर के ऊपर मोहल्ले की निवासी मृतक नर्सिंग छात्रा का नाम सुप्रिया कोटाल (23) है। वह नर्सिंग द्वितीय वर्ष की छात्रा थी।

निजी मेडिकल कॉलेज अस्पताल के सूत्रों के अनुसार, शुक्रवार दोपहर करीब

12:30 बजे नर्सिंग हॉस्टल की कुछ छात्राओं ने वार्डन को सूचना दी कि सुप्रिया कोटाल के कमरे का दरवाजा बंद है। कॉलेज प्रशासन और वार्ड स्टाफ ने दरवाजा तोड़ा और पाया कि सुप्रिया का शव उसी के दुपट्टे के सहारे सेलिंग फेन से लटका हुआ था। उसे मेडिकल कॉलेज अस्पताल के आपातकालीन विभाग में ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

कांकसा के मालनदिघी फाड़ी की पुलिस को इसकी सूचना दी गई। पुलिस ने छात्रावास के कमरे से सुप्रिया का कई सामान बरामद किया। सुप्रिया की मां महुआ कोटाल ने कहा, "हमें दोपहर 12:30 बजे सूचना मिली कि सुप्रिया को आईसीयू में भर्ती कराया गया है। जब हम पहुंचे तो पता चला कि उनकी बेटी की मौत हो चुकी है।"

सुप्रिया के रिश्तेदार पपी रक्षित ने कहा, "हम यह सुनकर मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुंचे कि सुप्रिया ने खुद को फांसी लगा ली है। जब हम पहुंचे तो हमें शव मिला। सुप्रिया ने केवल इतना बताया कि हमारी सभी लड़कियों में से 50 पास हुईं और दो फेल। हालांकि, हम उनकी मौत का कारण नहीं समझ पा रहे हैं।

मेडिकल कॉलेज अस्पताल के अतिरिक्त अधीक्षक डॉ. राजश्री गुप्ता ने बताया, "घटना दोपहर 12:30 से 1 बजे के बीच हुई। छात्राओं से सूचना मिलने पर वार्डन ने दरवाजा तोड़ा और देखा कि सुप्रिया का शव लटक रहा था। चूंकि हमारा अपना अस्पताल है, इसलिए हम उसे आपातकालीन विभाग में ले गए। वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस को सूचना दे दी गई है। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

नरेन हांसदा, साधारण से असाधारण बनने की कहानी

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (पुरुलिया): जिले के आरसा ब्लॉक, भाली डुंगरी निवासी नरेन हांसदा अशिक्षित होने के बावजूद सड़क पर रहने वाले बच्चों और अनाथ बच्चों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी लेकर एक साधारण व्यक्ति के असाधारण बनने की कहानी पेश की है।

जानकारी के अनुसार उन्होंने धीरे-धीरे, सामाजिक चेतना के गीत गाकर, गाँवों में पैसे इकट्ठा करके इस स्कूल का निर्माण किया। उनके स्कूल में नियमित रूप से मध्याह्न भोजन मिलता है। लेकिन सरकारी पैसे से नहीं, बल्कि गाना गाकर भीख मांगकर। उन्होंने पुरुलिया के आरसा ब्लॉक के भाली डुंगरी में सिद्धू कान्हू मिशन स्कूल का निर्माण किया जहां लगभग 40 आवासीय अनाथ बच्चे भी शामिल हैं। जिसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी अनाथ या गरीब बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे।

नरेन हांसदा अपने गीतों के माध्यम से हममें जागरूकता लाने का प्रयास करते रहे हैं। जो कभी-कभी भ्रूण हत्या, बाल श्रम, अंधविश्वास, महिला शिक्षा या महिला अधिकार जैसे सामाजिक मुद्दों पर सचेतना फैलाते हैं। सिद्धू कान्हू मिशन अनगिनत अनाथ बच्चों के लिए एकमात्र शरणस्थल और जीवनयापन का स्रोत बन गया है।

प्राथमिक विद्यालय के बाद भी यहां हर सुबह लगभग 150 बच्चे शिक्षा प्राप्त करने के लिए एकत्रित होते हैं। श्रमिक वर्ग के माहौल में, नरेन हांसदा और उनके कुछ सहयोगियों ने वर्षों तक निस्वार्थ स्वैच्छिक कार्य के माध्यम से इस स्कूल को पुरुलिया के सर्वश्रेष्ठ बाल विद्यालयों में से एक बना दिया है। यहां संथाली, बंगाली और अंग्रेजी शिक्षा प्रदान की जाती है। छात्रों को न केवल पढ़ाई, बल्कि संगीत, तीरंदाजी, खेल, आदिवासी रीति-रिवाज, खेती और वृक्षारोपण भी सिखाया जाता है।

कुछ साल पहले नरेन हांसदा झालदा थाना अंतर्गत बरुआकचा गांव में गाना गाकर पैसे जुटाने गए थे। वहां उन्हें खबर मिली कि गांव निवासी गरायचंद हांसदा और उनकी पत्नी शकुंतला की मृत्यु हो गई है। उनके चार बच्चे अब असहाय जीवन जी रहे हैं। यह सुनकर वे चारों बच्चों, सोमनाथ (10), रवि, मंगल और सिबिल (4) को अपने आश्रम ले गए। वे अब आश्रम में ही रहते हैं। वहां ऐसे दो अन्य बच्चे भी हैं।

नरेन के भाई सौरेन ने कहा, 'दादा बचपन से ही अलग रहे हैं। वह अकेले घूमते रहते, सारंगी बजाते और गाते रहते हैं। जिस तरह वह संथाली गीत गाते हैं, उसी तरह वह बंगाली झुमुर गीत भी गा सकते हैं। उन्होंने पहली बार 2008 के आसपास आश्रम की स्थापना की थी।

अनगिनत अनाथ बच्चों के लिए आश्रय स्थल सिद्धू कान्हू मिशन अब सभी के सहयोग से बहुत बदल गया है। जो पहले फूस की छत वाला मिट्टी का घर हुआ करता था, वह अब ईंटों का घर बन गया है। नरेन हांसदा के बारे में इतना कुछ कहा जा सकता है कि उसे पूरा करना असंभव है। वह अपने स्कूल के सामने की पहाड़ी पर पेड़ लगाकर उसे हरित क्षेत्र में बदल रहे हैं।

इन महान कार्यों के लिए उन्हें राज्य सरकार और विभिन्न सामाजिक संगठनों से विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। लेकिन नरेन हांसदा को ऐसे नेक काम के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया जाना चाहिए, अन्यथा भारत सरकार एक सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता को मान्यता देने में विफल हो जाएगी।

सुतंद्रा की मौत मामले में आरोपी ने कहा, मैं डर कर भाग गया था

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (दुर्गापुर): पानागढ़ में हुए सड़क हादसे के चार दिन बाद पुलिस ने आखिरकार गुरुवार को सफेद कार के मालिक और चालक बबलू यादव को अंडाल से गिरफ्तार कर लिया। शुक्रवार को जब उन्हें दुर्गापुर अदालत में पेश किया गया, तो पहली बार उन्होंने इस घटना पर चुप्पी तोड़ी। अदालत में ले जाते समय जब पत्रकारों ने उनसे पूछा कि हादसे के बाद वे क्यों भाग गए थे, तो बाबलू ने जवाब दिया, "मैं डर गया था, इसलिए भाग गया।"

पिछले रविवार रात पानागढ़ में हुए एक सड़क हादसे में चंदननगर की रहने वाली और इवेंट मैनेजमेंट कंपनी की संचालक सुतंद्रा चटर्जी (27) की मौत हो गई थी। प्रारंभिक आरोपों के मुताबिक, नशे में धुत कुछ युवकों ने अपनी सफेद कार से सुतंद्रा की नीली कार का पीछा किया और बार-बार टक्कर मारी, जिससे उसकी गाड़ी पलट गई और मौके पर ही सुतंद्रा की मौत हो गई।

यह दावा सुतंद्रा के साथ कार में मौजूद उसके सहकर्मियों ने किया था।

हालांकि, पुलिस का कहना है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ। पुलिस जांच में सामने आया कि दरअसल, सुतंद्रा की कार ने ही सफेद कार का पीछा किया था, और रेस के दौरान यह हादसा हुआ। लेकिन फिर भी पुलिस ने सफेद कार के मालिक बबलू यादव को क्यों नहीं गिरफ्तार किया, इस पर सवाल उठने लगे थे। इसी दबाव के बीच गुरुवार को पुलिस ने बबलू को गिरफ्तार किया। जांच में पुलिस ने पाया कि सफेद कार बबलू यादव की थी और उसी रात वह खुद इसे चला रहा था। बबलू का गाड़ियों के स्पेयर पार्ट्स का कारोबार है। लेकिन पुलिस ने उसे तुरंत गिरफ्तार नहीं किया, जिससे मृतका की मां तनुश्री चटर्जी ने सोमवार को कांकसा थाने जाकर सवाल उठाया था।

बबलू की गिरफ्तारी के बाद तनुश्री चटर्जी ने कहा कि सफेद कार में और भी लोग थे, उन्हें अब तक क्यों नहीं पकड़ा गया? मेरी बेटी की कार में मौजूद लोगों से भी पूछताछ होनी चाहिए। सच्चाई सामने आनी चाहिए। हमें न्याय चाहिए और दोषियों को सजा मिलनी चाहिए।

बबलू यादव का घर पानागढ़ के राइस मिल रोड के पास एक संकरी गली के अंत में है। इसी सड़क पर रविवार रात यह हादसा हुआ था। स्थानीय लोगों के मुताबिक, बबलू का परिवार मूल रूप से उत्तर प्रदेश का है। उसके दादा पानागढ़ आकर एक दुकान में काम करने लगे थे। लगभग आठ साल पहले बबलू ने खुद का गाड़ियों के स्पेयर पार्ट्स का बिजनेस शुरू किया था।

बबलू का नाम पहले भी विवादों में रह चुका है। फरवरी 2024 में, उसे चोरी के गाड़ी के पार्ट्स खरीदने के आरोप में बुदबुद थाने की पुलिस ने गिरफ्तार किया था, लेकिन तीन दिन बाद उसे जमानत मिल गई।

इसके बाद से ही उसका कारोबार तेजी से बढ़ा और इलाके में उसकी पहुंच भी मजबूत हो गई।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, बबलू की दुकान में काम करने वाले एक कर्मचारी का पैर चोटिल हो गया था, जिसे देखने के लिए वह रविवार शाम करीब सात बजे चार-पांच कर्मचारियों के साथ बर्दवान मेडिकल कॉलेज अस्पताल गया था। लौटते समय यह हादसा हुआ।

पांडवेश्वर क्षेत्र में सेवानिवृत होने पर सम्मान समारोह आयोजित

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (पांडवेश्वर): पांडवेश्वर क्षेत्र के एक अधिकारी और दो कर्मी को सेवानिवृत होने पर क्षेत्रीय सभागार में सम्मान समारोह आयोजित करके उनको सम्मानित किया, क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी खनन सत्येन्द्र प्रसाद सिंह, कर्मचारी जोहरलाल चटर्जी और सुरक्षा प्रहरी श्यामा प्रसाद दता को सेवानिवृत होने पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया,

इस अवसर पर क्षेत्र के महाप्रबंधक अमिताभ भट्टाचार्य ने कहा कि सरकारी सेवा में रहने वालों को एक दिन सेवानिवृत होना पड़ता है, लेकिन उनकी कार्यकलापों और कंपनी के लिए उनकी सेवा भावना हरदम याद आती है,

महाप्रबंधक ने तीनों को उज्जवल भविष्य की कामना किया, क्षेत्र के कार्मिक प्रबंधक फनीद्र सिंह ने कहा की पांडवेश्वर क्षेत्र से आपलोग सेवानिवृत हुए है लेकिन कोई भी कागजी कार्रवाई हो या कोई असुविधा हो निसंकोच आपलोग विभाग को बताए आपके साथ विभाग सहयोग के लिए तैयार मिलेगा,

इस अवसर पर क्षेत्रीय अभियंता संजय मंडल, जीएम के सचिव चिरंजीव देवनाथ, समेत अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे,

बहुला में आयोजित श्याम भजन संध्या से भक्तिमय हुआ परिवेश

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (पांडवेश्वर) पांडवेश्वर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत बहुला स्थित बहुला प्राथमिक विद्यालय प्रांगण में श्याम भक्तों ने गुरुवार को भजन संध्या आयोजित की। जहां सैकड़ों की संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने भजन का आनंद उठाया। कलाकारों के भजन से पूरा इलाका भक्तिमय हो गया। श्याम भक्त भक्ति गीतों पर झूमते दिखें। भजन संध्या में मारवाड़ी सामाज के महिला-पुरुषों के अलावा दूसरे समुदाय के लोग भी उपस्थित रहें। सभी ने श्याम बाबा का जयकारा लगाया। कार्यक्रम में रानीगंज श्याम मंदिर के पुजारी, तृणमूल नेता प्रेमपाल सिंह, बहुला पंचायत के उप-प्रधान बिरबहादुर सिंह इत्यादि भी उपस्थित होकर श्याम बाबा के समक्ष नतमस्तक हुए। जिन्होंने कहा इस प्रकार के कार्यक्रम से न केवल बहुला बल्कि पूरा पांडवेश्वर श्याम बाबा की भक्ति में लीन हो गया। प्रेमपाल ने इलाके में विशाल भक्ति संध्या आयोजित करने के लिए श्याम परिवार को धन्यवाद दिया।

एनएस एचएम नॉलेज कैंपस में खेल, सांस्कृतिक और खाद्य महोत्सव ब्लिट्ज़ का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (दुर्गापुर): ब्लिट्ज 2025 का आयोजन एनएस एचएम नॉलेज कैंपस में सफलतापूर्वक किया गया। इस बार खेल, सांस्कृतिक और खाद्य महोत्सव 19 से 22 फरवरी 2025 तक आयोजित किया गया था। यह पारंपरिक अंतर-कॉलेज उत्सव रचनात्मकता, प्रतिभा और शारीरिक कौशल का एक शानदार प्रदर्शन था, जहाँ विभिन्न कॉलेजों और स्कूलों के छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए एक साथ आए। इस कार्यक्रम का उद्घाटन गणेश और सरस्वती वंदना और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

प्रोफेसर डॉ. आलोक सत्संगी, पीयूष भट्टाचार्य, गौतम बसु, डॉ शांता डे, डॉ शांतनु बनर्जी, डॉ मिलिंद, डॉ विजय मंडल, डॉ मनोजीत मित्रा, संदीप बनर्जी व अन्य शख्सियतों के बाद डॉ देव कुमार दास व डॉ नीलकमल बारो ने मशाल जलाकर इस खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन किया, ब्लिट्ज 2025 में फैशन शो, रॉक बैंड प्रदर्शन और डीजे नाइट्स समेत कई प्रतियोगिताएं हुईं, जिसने सभी लोगों के मन में एक अविस्मरणीय अनुभव पैदा कर दिया, शुक्रवार शाम को ग्रैंड फूड फेस्ट का आयोजन किया गया जिसमें खाने के शौकीनों के लिए तरह-तरह के लजीज व्यंजन थे, ब्लिट्ज 2025 के आखिरी दिन खेलों में हिस्सा लेने वाले सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए.

पुरस्कार वितरण समारोह में राज्य मंत्री प्रदीप कुमार मजूमदार, आसनसोल दुर्गापुर विकास प्राधिकरण के चेयरमैन कवि दत्ता, दिलीप सिंह मेहता चेयरमैन ट्रस्टी, फ्रांसिस एंटनी ट्रस्टी श्री सिद्धांत फ्रांसिस और डॉ. आलोक सत्संगी निदेशक एनएसएचएम नॉलेज कैंपस। इस वर्ष 14 सांस्कृतिक एवं 11 खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें 38 महाविद्यालयों एवं 9 विद्यालयों ने भाग लिया।

ईसीएल शताक्षी महिला मंडल की अध्यक्षा ने स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का किया शिलान्यास

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (पांडवेश्वर): ईसीएल शताक्षी महिला मंडल की अध्यक्षा किरण झा ने पांडवेश्वर क्षेत्र का दौरा किया, पांडवेश्वर क्षेत्र पहुंचने पर पांडवेश्वर शाखा की अध्यक्षा कोयल भट्टाचार्य ने आत्मीय स्वागत किया, अपने दौरा के क्रम में श्रीमती किरण झा ने पांडवेश्वर शताक्षी महिला मंडल की कार्यकलापों और सामाजिक सेवा भावना का जानकारी लेने के बाद सभी सदस्या से परिचय प्राप्त किया और शताक्षी महिला मंडल की ओर सेवा भावना और जरूरतमंदों के बीच सेवा करते रहने की बात कही,

शताक्षी महिला मंडल ईसीएल की अध्यक्षा ने बीआर अंबेडकर चिल्ड्रेन्स पार्क का उदघाटन करने के बाद पांडवेश्वर क्षेत्र में स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास किया, इस अवसर पर उन्होंने कहा की ईसीएल एक अच्छी कंपनी है और इसे कोयला उत्पादन में एक नंबर कंपनी बनाने के लिए हम सभी के सहयोग की आवश्यकता है, तभी कंपनी और विकास कार्यों को अंजाम देती रहेगी ,इस अवसर पर क्षेत्र के सभी विभागाध्यक्ष और शताक्षी महिला मंडल की सभी सदस्या उपस्थित थी,

कुल्टी विधायक डॉ अजय पोद्दार ने लोको विदाईगढ़ इलाके का दौरा किया

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (नियामतपुर): कुल्टी विधायक डॉ अजय पोद्दार ने सीतारामपुर जंक्शन स्टेशन के लोको विदाईगढ़ इलाके का दौरा लाइट की कमी से हो रही समस्या को देखते हुए किया। कुल्टी विधायक डॉ अजय पोद्दार ने कहा कि सीतारामपुर का ज्यादातर इलाका रेलवे से जुड़ा हुआ हैं। सीतारामपुर विदाईगढ़ में लाइट की कुछ कमी की ख़बर हमारे स्थानीय कार्यकर्ताओं को यहाँ के लोगों ने दिया था।

विधायक ने कहा आसनसोल रेलवे प्रशासन की ओर से बिजली विभाग के एसएससी रैंक के अधिकारी श्री सेन को विशेष तौर पर भेजा गया हैं। सीतारामपुर टैगोर स्थित हाई मास्क लाइट को जल्द से जल्द चालू करना और विदाईगढ़, इंदिरा चौक तक प्रत्येक पोल पर लाइट लगाने का निर्देश दिया। सीतारामपुर श्मशान घाट के रास्ते पर तीन नए स्ट्रीट लगाने को कहा गया।

मौके पर कुल्टी विधानसभा के भाजपा युवा नेता टिंकु वर्मा, सुनील भर, काजल दास, कवि सिंह, उत्तम मंडल, निर्मल मांझी, सोमेन चक्रवर्ती, पुघरा मंडल, पंकज दास , संदीप यादव समेत कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

चिनाकुड़ी कोलियरी में नौकरी के लिए आवेदन जमा करने के दौरान मारपीट

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (नियामतपुर): ईसीएल के सोदपुर एरिया अंतर्गत चिनाकुड़ी कोलियरी में नौकरी के लिए आवेदन जमा करने के दौरान मारपीट की घटना घटी. इस घटना को लेकर नियामतपुर फाड़ी में ग्राम समिति के सदस्यो द्वारा प्राथमिकी दर्ज किया गया.

जानकारी के अनुसार चिनाकुड़ी कोलियरी को इनोवेटिव माइनिंग प्रोजेक्ट्स नामक एक निजी कंपनी को दे दी गई हैं। जिसे लेकर आसपास के कुछ गांवों के लोगों द्वारा समस्त ग्राम समिति नामक संगठन बनाया गया है. जिसके तहत कोयला खदान में स्थानीय बेरोजगार युवको को नौकरी देने की मांग की जा रही हैं, शुक्रवार की सुबह नामो की सूची लेकर कुछ लोग चिनाकुड़ी एक दो नंबर कोलियरी कार्यालय पहुंचे थे.

समिति के सदस्य जोगाई महतो ने आरोप लगाते हुए कहा कि स्थानीय दो युवक विजय नोनिया और राज नोनिया ने उनके दस्तावेज छीनकर फाड़ दिया और बेल्ट से पिटाई की। वहीं समिति के लोगों की इसकी जानकारी मिलते ही काफी संख्य में हीरापुर थाना अंतर्गत जुनूट और सोलोनी के ग्रामीण पहुंच कर विरोध प्रदर्शन करने लगे. वहीं घटना स्थल पर बड़ी संख्या में पुलिस बल पहुंच कर मामले को शांत करवाया। जोगाई महतो ने कहा कि बेल्ट के बकल से सपन महतो और विजय गोराई का सिर फट गया है।

समिति के सदस्यों ने कहा कि आस -पास के करीबन एक दर्जन गांव को मिलाकर समिति बनाई गई है। शुरुआती दौर में 30 लोगों को नौकरी देने की बात हैं। उसके बाद अभी फिलहाल 20 और लोगों को नौकरी के लिए आवेदन देने को कहा गया हैं।

वहीं दूसरा पक्ष जो चिनाकुड़ी कोलियरी के आसपास के स्थानीय लोगों ने कहा कि हम लोगों को भी समिति का सदस्य बनाया गया हैं. हमारे यहां के बेरोजगारों को नौकरी देने की बात थी. परन्तु देखा गया कि पास के लोगों को बाद देकर दूर-दराज के ग्रामीणों का नाम दिया जा रहा था, विरोध होने पर हमारे बीच धक्का मुक्की हुई। हालाँकि अभी फिलहाल एक पक्ष द्वारा ही लिखित शिकायत फाड़ी में दी गई है।

वही दूसरी तरफ विजय नोनिया की पत्नि और राज नोनिया की मां ने आरोप लगाते हुए एक लिखित शिकायत नियामतपुर फाड़ी में दर्ज करवाई, जिसमें आरोप लगाते हुए कहा कि हम दोनों के घरों में जोगाई महतो, सपन महतो, विजय गोराई सहित करीबन 20 से 30 की संख्या में लोगों ने घुस कर महिलाओं बच्चों के साथ मारपीट किया गंदी गंदी गली गलौज करते हुए गंदी हरकत भी की. घर का सामान तोड़ फोड़ कर बना हुआ खाना फेक दिया। पुलिस द्वारा खदेड़े जाने पर वो लोग भागकर हीरा पुर थाने इलाके में चले गए।

सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए ऑन-डेट भुगतान आयोजित

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (आसनसोल): कार्मिक विभाग द्वारा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के नवीन सभा कक्ष में फ़रवरी 2025 के लिए ऑनडेट भुगतान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कुल 40 सेवानिवृत्त अधिकारी/ कर्मचारी/ मृतक रेलवे कर्मचारियों की विधवाओं को निपटान बकाया, पीपीओ (पेंशन भुगतान आदेश), निपटान विवरण और यूएमआईडी कार्ड (सेवानिवृत्त कर्मचारी उदारीकृत स्वास्थ्य योजना (आरईएलएचएस) कार्ड के बजाय) सौंपे गए। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी, डॉ. ब्यास मुखर्जी मंडल रेलवे अस्पताल के मंडल चिकित्सा अधिकारी और अन्य अधिकारीगण मौजूद थे।

BHOLA ELECTRICAL
G.T.ROAD NEAMATPUR, AASANSOL WEST BENGAL—713359
ALL KIND OF ELECTRICAL JOB : CONTACT : 9064588166
SALES, SERVICE & CCTV CAMRA INSTALLATION,
HOUSE WIRING, MOTER & FAN WINDING

पांच दिवसीय भागवत पाठ अनुष्ठान में शामिल हुए कृष्णा प्रसाद, हुआ भव्य स्वागत

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (आसनसोल): दक्षिण थाना अंतर्गत जगडीह नव उधोग संघ की ओर से पांच दिवसीय भागवत पाठ का आयोजन के अंतिम समापन दिन समाजसेवी कृणा प्रसाद का स्थानीय जगडीह ग्रामीणों ने उलू देकर, साथ ही भागवत पाठ कर रहें महाराज के पवित्र प्रवचन से उनके पवित्र महाकुंभ स्नान के आयोजन का सफ़ल गुणगान के साथ स्वागत किया। उक्त पांच दिन व्यापी श्रीमद भागवत पाठ श्री ऋषिकेश बनर्जी महाराज के अमृत मुख से सुना गया।

जगडीह ग्राम सह नव उधोग संघ के अनिमेष माझी ने कहा पांच दिवसीय भागवत पाठ हमारे यहाँ के सभी ग्रामीणों ने बुजुर्गों ने अपनी आपसी सहमति से इस भव्य पाठ का आयोजन सफलतापूर्वक किया हैं। श्री मांझी ने कहा हमारे पांच दिवसीय भागवत पाठ के अंतिम दिन हमारे पश्चिम बंगाल आसनसोल के सनातनी गौरव महापुरुष कृष्णा प्रसाद को विशेष रूप से हमारे ग्राम के लोगों के आग्रह निवेदन पर उन्हें आमंत्रित किया गया। महान समाज सेवी कृष्णा प्रसाद ने दो हज़ार लोगों को महाकुंभ का अमृत स्नान कराया वह भी निशुल्क, हमारे यहाँ से जो भी इस महाकुभ के पवित्र स्नान में गये थे, वे सभी एससी, एसटी, जनरल कास्ट के ग़रीब परिवार से थे, जो रुपये के कमी के कारन नहीं जा सकते थे। वे सभी इस युग के देवदूत कृष्णा प्रसाद के असाधारण, अलकल्पनिय अभूतपूर्व व्यवस्था के साथ आसनसोल माँ घाघराबुरी मंदिर के प्रांगनाम से प्रयागराज से सफ़लपूर्वक आसनसोल पहुँच कर इतिहास बना चूके हैं। श्री मांझी ने कहा श्रीमद भागवत कथा में उन्हें महाराज के हाथों माला पहनाकर स्वागत किया गया, महिलाओं ने चंदन तिलक और उलू देकर भव्यता से सम्मानित किया।

आज का राशिफल

01 मार्च 2025
शनिवार

कोलफील्ड मिरर

मेष

दिन अच्छा रहेगा। चली आ रही स्वास्थ्य समस्या से राहत महसूस करेंगे। मन प्रसन्न रहेगा। कोई नया काम शुरू कर सकते हैं। व्यापार में लाभ प्राप्त होगा। परिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा। किसी काम से यात्रा पर जाना पड़ सकता है।

वृषभ

दिन उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। अपनी वाणी पर संयम रखें। किसी परिचित से विवाद हो सकता है। व्यवसाय में अपने पार्टनर से धोखा मिल सकता है। स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आपको जीवन स्तर सुधारने के लिए प्रयासरत रहना होगा।

मिथुन

दिन शानदार रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे। व्यापार में किसी परिचित व्यक्ति से लाभ प्राप्त होगा। कोई बड़ी डील कर सकते हैं। किसी धार्मिक यात्रा पर जा सकते है। बेहतर होगा कि काम पर फोकस रखें।

कर्क

दिन अनुकूल नहीं रहेगा. कोई बड़ा जोखिम न उठाएं। पार्टनरशिप में कोई नया काम सोच विचार कर करें. व्यापार में नुकसान उठाना पड़ सकता है। वाणी पर संयम रखें. वाद-विवाद से खुद को दूर रखें। स्वास्थ्य को लेकर चिंतित रहेंगे।

सिंह

दिन शानदार रहेगा. समाज में मान-सम्मान की वृद्धि होगी। किसी परिचित से मिलना होगा। व्यापार में कोई बड़ा निर्णय ले सकते हैं। कार्यक्षेत्र में बड़ा निवेश आप कर सकते है. विरोधियों से सतर्क रहें। स्वास्थ्य पर ध्यान रखे.

कन्या

दिन मिलाजुला रहेगा। काफी भागदौड़ करनी पड़ेगी। किसी काम में मन नहीं लगेगा। कार्य को उत्साहपूर्ण पूरा करें। मान सम्मान में वृद्धि होगी। आपकी योजनाएं सफल होंगी। यात्रा आदि पर जाएं तो वाहन आदि संभलकर चलाएं।

तुला

दिन अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। परिवार और समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। व्यापार में नई साझेदारी से कोई बड़ा कार्य शुरू कर सकते हैं। परिवार में मांगलिक कार्यक्रम होंगे। विरोधियों की भीड़ से आप परेशान रहेंगे।

वृश्चिक

दिन उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। वाद-विवाद से खुद को दूर रखें। कोई नया काम आज शुरू न करें। व्यवसाय में हानि उठानी पड़ सकती है। मन अशांत रहेगा। स्वास्थ बिगड़ सकता है। बनते-बिगड़ते परिवेश में नवीन योजना सफल होगी।

धनु

दिन अच्छा रहेगा। रुके हुए कार्य पूर्ण होने से मन प्रसन्न रहेगा। पुराने दोस्त से मिलना होगा। कोई नया काम शुरू कर सकते हैं। जीवनसाथी का सहयोग और प्रेम प्राप्त होगा। व्यवसायिक उन्नति होगी। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

मकर

दिन शुभ रहेगा। मन प्रसन्न रहेगा। व्यवसाय में नई साझेदारी शुरू कर सकते हैं। परिवार में मान-सम्मान बढ़ेगा। किसी व्यक्ति विशेष से मिलना होगा। जीवन साथी से मतभेद खत्म होंगे। धार्मिक यात्रा पर जा सकते हैं। सेहत ठीक रहेगा।

कुंभ

दिन अनुकूल नहीं रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखना होगा। वाद विवाद से दूर रहें। परिवारिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। कार्य के सिलसिले में किसी विशेष व्यक्ति से मिल सकते हैं। जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर रहेगे।

मीन

दिन मिलाजुला रहेगा। व्यापार आदि में बड़ा डिसीजन न लें। पारिवारिक कलह के कारण मन दुखी रहेगा। किसी कार्य के लिए आपको बाहर जाना पड़ सकता है। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें। वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने राज्य के प्राइमरी स्कूलों को दी बड़ी सौगात

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): रांची/ झारखंड सरकार ने राज्य में प्राथमिक शिक्षा को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने राज्य के 28,945 सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को टैबलेट प्रदान किए। यह ऐतिहासिक पहल राज्य के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के तहत झारखंड मंत्रालय परिसर में आयोजित एक समारोह में की गई। इस कार्यक्रम के दौरान गुणवत्तायुक्त शिक्षा संवर्धन के लिए विद्यालय रिपोर्ट कार्ड और शिक्षकों के लिए 50 घंटे के अनिवार्य समेकित-सतत क्षमता विकास कार्यक्रम का भी ऑनलाइन शुभारंभ किया गया।

झारखंड सरकार का यह निर्णय शिक्षकों को डिजिटल साक्षरता से जोड़ने और शिक्षण प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। अब सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की

हाजिरी से लेकर अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाएं ऑनलाइन की जाएंगी। इससे शिक्षकों की जवाबदेही बढ़ेगी और कक्षाओं में उनकी उपस्थिति सुनिश्चित होगी।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि हमारी सरकार शिक्षा के डिजिटलीकरण को प्राथमिकता दे रही है। शिक्षकों को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना समय की जरूरत है ताकि वे छात्रों को आधुनिक और प्रभावी तरीके से शिक्षित कर सकें। राज्य सरकार ने बजट सत्र से पहले यह पहल कर झारखंड के लोगों को एक बड़ी सौगात दी है। झारखंड में कई ऐसे सुदूरवर्ती क्षेत्र हैं, जहां शिक्षा की गुणवत्ता और संसाधनों की कमी एक बड़ी चुनौती रही है। इस पहल के तहत अब इन इलाकों के स्कूलों में भी डिजिटल माध्यम से पढ़ाई को सशक्त किया जाएगा।

गौरतलब है कि हेमंत सोरेन सरकार के सत्ता में वापसी के बाद यह पहला बजट सत्र है, जो तीन मार्च को पेश किया जाएगा। इससे पहले प्राथमिक स्कूलों को टैबलेट उपलब्ध कराना एक क्रांतिकारी कदम माना जा रहा है, जो सरकारी स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने में मदद करेगा। झारखंड सरकार ने विभिन्न जिलों के लिए टैबलेट की आधिकारिक आवंटन सूची जारी की है, जिसमें हर जिले के प्राथमिक विद्यालयों को उनकी आवश्यकता के अनुसार टैबलेट प्रदान किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने की स्वास्थ्य बीमा योजना का शुभारंभ, मुफ्त इलाज की व्यवस्था

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): रांची/ मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शुक्रवार को राज्यकर्मियों को बड़ी सौगात दी. झारखंड विधानसभा के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य बीमा योजना का शुभारंभ किया. इस योजना के तहत राज्य के कर्मियों के अलावा पेंशनर, विधानसभा के सदस्य, पूर्व सदस्य, विश्वविद्यालय के शिक्षक और कर्मियों का 5 लाख रुपये तक का इलाज मुफ्त में होगा. इसके अलावा गंभीर बीमारियों की स्थिति में कुल 10 लाख रुपये तक चिकित्सा व्यय का वहन भी किया जाएगा. वहीं, विशेष परिस्थितियों में लाभुकों को एयर एंबुलेंस की भी सुविधा उपलब्ध करवायी जाएगी. इस स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ लेने के लिए जेएपीटी द्वारा विकसित पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करना होगा.

सीएम हेमंत सोरेन ने मौके पर मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए कहा, "आज व्यक्तिगत तौर पर बेहद सुखद अनुभव हो रहा है. देशभर में आज हर एक व्यक्ति किसी न किसी शारीरिक समस्या से जूझ रहा है.

बी.पी और शुगर की समस्या इन दिनों बेहद आम हो गई है. दवाइयों और अन्य चीजों की कीमत भी आसमान छू रही है. जैसा अस्पताल वैसे उसके खर्चे. झाड़-फूंक ओझा वाला समय अब पार हो गया. वो भी एक मजबूत व्यवस्था थी लेकिन हम उस व्यवस्था और परंपरा को आगे बढ़ने में नाकाम रहे. आज बड़े-बड़े अस्पतालों और दवाइयों के भरोसे जीवन चल रहा है. ये राज्य गरीबी के साथ-साथ पिछड़ेपन का भी शिकार है. लेकिन हम हर संभव प्रयास कर रहे है की राज्य की विभिन्न समस्याओं को जड़ से खत्म किया जाये."

वहीं इस मौके पर मौजूद राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफ़ान अंसारी ने कहा कि आज हमारे राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का सपना साकार हो रहा हैं. उन्होंने कहा कि जब एक डॉक्टर राज्य का स्वास्थ्य मंत्री बनता है और राज्य की कमान हेमंत सोरेन के हाथों में हो तो राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं का ख्याल रखना हमारा कर्त्तव्य बन जाता है. अब राज्य में किसी भी परिवार को पैसे की कमी के कारण इलाज से वंचित होना नहीं पड़ेगा.

बीसीसीएल द्वारा सेवानिवृत्ति लाभ नहीं देने की शिकायत जनता दरबार में

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): एडीएम लॉ एंड ऑर्डर पीयूष सिन्हा ने शुक्रवार को आयोजित जनता दरबार में जिले के बलियापुर, गोविंदपुर, तोपचांची, झरिया सहित अन्य क्षेत्रों से आए लोगों की शिकायतें सुनी।

इसमें गोविंदपुर महुबनी के सुंदर पहाड़ी से आयी एक वृद्ध महिला ने एडीएम को बताया कि उनके पिता भारत कोकिंग कॉल लिमिटेड (बीसीसीएल) में कार्यरत थे। उनकी मृत्यु वर्ष 1982 में हो गई थी। कई दशक बीत जाने के बाद भी बीसीसीएल ने उनके स्वर्गवासी पिता का पीएफ, ग्रेच्युटी एवं सेवानिवृत्ति के अन्य लाभ का भुगतान नहीं किया है।

गौरतलब है कि महिला काफी उम्रदराज थी और स्पष्ट हिन्दी बोलने में असमर्थ थी। इसलिए वह संथाली भाषा में एडीएम के साथ वार्तालाप कर रही थी। उनकी बातों को अच्छे से समझने के लिए एडीएम ने संथाली भाषा बोलने वाले एक कर्मी को बुलाया। उसने महिला की सारी बातें संथाली भाषा में सुनी और महिला की पीड़ा एडीएम को बताई। एडीएम ने तत्काल मामले पर संज्ञान लेते हुए बीसीसीएल के सीएमडी को पत्र लिखने और महिला की समस्या का समाधान करने का निर्देश दिया।

एक अन्य महिला ने बताया कि उसने आमाघाटा लेमन चिल्ली होटल के पास जमीन दलाल से 2 डेसिमल जमीन खरीदी। जमीन की रजिस्ट्री नहीं हुई है। जब वह जमीन पर घर बनाने गई तब पता चला कि जमीन सीएनटी एक्ट की है। महिला ने बताया कि उन्होंने ऋण लेकर जमीन दलाल को भुगतान किया है। उन्होंने जमीन के लिए दिए गए पैसे वापस दिलाने की गुहार लगाई।

जनता दरबार में राशन कार्ड में नाम जुड़वाने, पीएम आवास की स्वीकृति प्रदान करने, ऑनलाइन पंजी 2 में नाम दर्ज कराने, भू-माफियाओं द्वारा रैयती जमीन पर जबरन कब्जा करने सहित अन्य आवेदन प्राप्त हुए।

जनता दरबार में सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा नियाज अहमद, जनशिकायत कोषांग के प्रधान लिपिक नंदकिशोर कुशवाहा भी मौजूद थे।

चोरों ने निरसा में चौथी बार चोरी कर खाने पीने का सामान लेकर भाग गए

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): चिरकुंडा, पोटरी स्थित स्कूल के प्रधानाध्यापक के द्वारा बताया गया की स्कूल में यह चौथी बार चोरी की घटना घटी है। जानकारी देते हुए स्कूल के प्रधानाध्यापक विष्णु लाल किस्कु ने बताया कि पहले भी कई बार स्कूल में चोरी की घटना घट चुकी है। लेकिन बीती रात चोरों ने स्कूल में रखे चावल दाल तेल और अन्य खाने-पीने सामान के साथ पानी के मोटर और कुछ कुर्सियां चोरी कर ली गई है। जिसकी लिखित शिकायत कुमारधुबी ओपी में की गई है।

इसकी सूचना मिलते ही कुमारधुबी की पुलिस स्कूल में पहुंचकर मामले के छानबीन में जुट गई है। वही माता समिति के सदस्य चाइना बावरी ने कहा स्टोर में रखे बक्से में चावल दाल तेल जैसे सभी सामान रखे हुए थे। सुबह देखा तो पूरा बक्सा खाली है। इसकी जानकारी स्कूल के प्रधानाध्यापक को दिया गया। एग्यारकुंड प्रखंड के उप प्रमुख विनोद दास ने कहा कि यह स्कूल प्रबंधन की लापरवाही है। पहले भी स्कूल से कई कीमती सामानों की चोरी हो गई है। इसके बाद भी प्रबंधक सजग नहीं हुए, यह चौथी बार स्कूल में चोरी की घटना हुई है। स्कूल के प्रधानाध्यापक को सीसीटीवी कैमरा लगाना चाहिए, स्कूल के बाउंड्री वालों को ऊंचा करना चाहिए, दीवार का हाइट कम रहने के कारण चोर दीवार फांदकर स्कूल में प्रवेश करते हैं।

सीएफएम संक्षिप्त

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उत्तराखंड के श्रमिकों की सुरक्षा की कामना की

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): रांची/ मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उत्तराखंड में ग्लेशियर टूटने के कारण फंसे श्रमिकों के सुरक्षा की कामना की है. उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा है कि उत्तराखंड के चमोली जिले में बीआरओ अंतर्गत कार्य कर रहे कई श्रमिकों की टूटे ग्लेशियर की चपेट में आने की खबर मिली है. जानकारी के अनुसार, बीआरओ, आइटीबीपी व अन्य द्वारा राहत और बचाव कार्य चलाया जा रहा है. मरांग बुरु से इस हादसे की चपेट में आये सभी श्रमिकों की सुरक्षा की कामना करता हूं.

टुंडी थाना के चौकीदार का शव मिला खेत में

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): टुंडी थाना में पदस्थापित चौकीदार रोहित बाउरी (40) का शव गुरुवार की देर शाम दुर्गाडीह के पास खेत में संदेहास्पद स्थिति में मिला, दुर्गाडीह में उसका घर भी है, लोगों ने बताया कि मृतक अत्यधिक मदिरा का सेवन करता था, उसकी मौत कैसी हुई, पोस्टमार्टम के बाद ही पता चल पायेगा, बताया जाता है कि रोहित के पिता सुकू बाउरी पहले चौकीदार था. वर्ष 2009 में पिता के जगह पर उसकी चौकीदार में बहाली हुई थी।

बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार से एक कैदी फरार

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): रांची के होटवार स्थित बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार से एक कैदी फरार हो गया है। शुक्रवार को हुई सामूहिक हाजिरी के बाद जेल प्रशासन को जानकारी मिली कि कैदी फरार हो गया है। जिसके बाद जेल में हड़कंप मच गया।

दारोगा को पांच हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ा

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): एंटी करप्सन ब्यूरो ने रांची के कोतवाली थाना के एक दारोगा को पांच हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। दारोगा एक व्यक्ति को मोबाइल थाना से छुड़ाने के नाम पर रिश्वत मांग रहा था। दारोगा की गिरफ्तारी की पुष्टि एसीबी के द्वारा की गई है।

अवकास प्राप्त कर्मी का विदाई सह सम्मान समारोह संपन्न

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): शुक्रवार को गोलकडीह 0 सीम कुइयां कोलियरी में कार्यरत सदरे आलम, अभिजीत हलधर गुरु राय को एक सादे समारोह में विदाई सह सम्मान समारोह कर विदाई दी गई। जिसकी अध्यक्षता प्रहलाद महतो द्वारा की गई। भेट स्वरूप कई आवश्यक सामग्री व माला पहनाकर कर स्वागत की गई। इस अवसर पर खान प्रबंधक चन्द्रशेखर सिंह, सहायक प्रबंधक मोहित अग्रवाल, ठाकुर जी अभियंता सप्तम रोजी मितय यूनियन प्रतिनिधी देव रंजन दास, सुभाष महतो, कैलाश सिंह, रामबली पासवान, दिनेश कुमार मिश्रा, विनोद कुमार प्रजापति, राकेश सिन्हा, अलोक सिंह, शिव शंकर महतो, निताई चन्द्र माजी, लव कुमार, भगवान प्रसाद नोनिया, विरेन्द्र कुमार मोदी, हरि बाउरी छुननु रजवार घुचु राय आदि उपस्थित थें।

228 एकड़ मे लगे अवैध अफीम को विनष्ट किया गया

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): चाईबासा/ अफीम की खेती के खिलाफ अभियान में बंदगांव थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम तुपूदांग में करीब 05 एकड़ जमीन पर लगी अफीम को सशस्त्र बल के सहयोग से विनिष्ट किया गया। दूसरी ओर खूँटी थानान्तर्गत ग्राम-करगे, इरूद, तोरंगकेल में 52 एकड़, मुरहू थाना अंतर्गत ग्राम सांडीगांव, गरई में 38 एकड़, अड़की थाना अंतर्गत ग्राम उलिपिड़ी, उलीहातु टोला कनट्रापीडी गुनतुरा, गैरने, कुरिया टोला बारीकीर, पोडका, मारंगबुरु टोला तुपुंगडीह मे 66 एकड़, सोयको थाना अंतर्गत सेकरे, गुटुहातु अनीडीह में 07 एकड़ एवं मारंगहादा थाना अंतर्गत के बिचागुटू, बोकड़ाहेसा में 65 एकड़ कुल 228 एकड़ मे लगे अवैध अफीम को विनष्ट किया गया।

पत्रकारों ने दिवंगत पत्रकार मुकेश श्रीवास्तव की 13वीं पुण्यतिथि मनाई

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): चिरकुंडा, निरसा चिरकुंडा के पत्रकारों ने शुक्रवार को निरसा प्रखंड कार्यालय परिसर में वरीय पत्रकार स्वर्गीय मुकेश श्रीवास्तव की 13वीं पुण्यतिथि मनाई गई। उक्त अवसर पर उनकी तस्वीर पर पत्रकारों एवं बुद्धिजीवियों ने माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर श्रध्दांजलि दी। साथ ही 2 मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति की कामना की। उक्त अवसर पर वरीय पत्रकार बीके सिंह ने कहा कि मुकेश श्रीवास्तव कलम के धनी होने के साथ-साथ व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के भी घनी थे। उन्होंने अपनी लेखनी से समाज को नई दिशा दिखाई। उन्होंने हमेशा सामाजिक कुरीतियों के साथ-साथ समाज में व्याप्त असमानता पर अपनी कलम चलाई। वे कलम के धनी होने के साथ-साथ एक अच्छे क्रिकेट खिलाड़ी भी थे। उन्होंने जिला स्तर पर आयोजित होने वाले क्रिकेट प्रतियोगिता में भी भाग लेते थे। उन्होंने हमेशा नए पत्रकारों को पत्रकारिता के लिए प्रेरित किया। वर्तमान समय में पत्रकारों के समक्ष कठिन चुनौतियां हैं। हमें अपने वरिष्ठ साथियों के अनुभवों के साथ-साथ अपने अनुभव के साथ इन चुनौतियों का सामना करना है। वह भले ही आज हमारे बीच नहीं है परंतु उनके बताए मार्ग पर हम सभी चलें यही उनके सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम की पत्रकार इंद्रदेव प्रसाद एवं संचालन संजय सिंह ने किया। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में निरसा बीडीओ इंद्रलाल ओहदार, निरसा व्यापार मंडल समिति के श्यामदेव चौरसिया, सुनील अम्बष्ट, उत्तम झा, धर्मदेव चौधरी, हरेंद्र कुमार सैनी, अनिमेष पोद्दार, अवध प्रसाद, अमित श्रीवास्तव, संजय सिंह, विश्वजीत पांडे, पूर्णेन्दु दत्ता, इंद्रदेव राजवंशी, विजय श्रीवास्तव, अरुप पाल, निवास सिंह राजकुमार सिंह, सपन कांजीलाल, दिनेश गोस्वामी, अजीत साधु, बुबाई घोष, संजय शर्मा आदि शामिल थे।

एमपीएल प्रबंधन मजदूरों के आगे झुका मांगा समय

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): चिरकुंडा, यदि 8 मार्च को नहीं हुई सकारात्मक वार्ता तो 9 मार्च से पुन मजदूर अनिश्चितकालीन गेट जाम कर देंगें। पूर्व नियोजित कार्यक्रम के तहत, निरसा में एमपीएल प्रबंधन द्वारा संविदा मजदूर की वेतन वृद्धि की मांगों के साथ चार सूत्री मांगों को लेकर एमपीएल के ढुलमुल नीति के खिलाफ मजदूरों ने शुक्रवार को सुबह से एमपीएल का गेट जाम कर दिया और प्रबंधन के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की दोपहर लगभग 12 बजे प्रबंधन की तरफ से आगामी 8 मार्च को बात करने के लिए लिखित आश्वासन दिया गया। जानकारी देते हुए ज़िप सदस्य संजय सिंह एवं मजदूर नेता श्याम कांत पांडे ने बताया कि यदि 8 मार्च को प्रबंधन की तरफ से सकारात्मक वार्ता नहीं होती है और मजदूरों की मांगों को नहीं माना जाता है तो 9 मार्च से अनिश्चितकाल के लिए गेट जाम कर दिया जाएगा। जिसकी पूरी जवाब देही एमपीएल प्रबंधन की होगी।

भगवान बिरसा की प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ दुर्भाग्यपूर्ण, दोषी पर हो कार्रवाई:- दिलीप सिंह

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): युवा संघर्ष मोर्चा के संस्थापक अध्यक्ष दिलीप सिंह ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ दुर्भाग्यपूर्ण है। जिला प्रशासन से मांग है कि वैसे असामाजिक तत्वों पर कार्रवाई हो। श्री सिंह ने कहा कि भगवान बिरसा हमारे भगवान हैं और उनके प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ युवा संघर्ष मोर्चा कतई बर्दास्त नहीं करेगा। बार-बार यहां की प्रतिमा को नुकसान पहुंचाया जा रहा है इस पर भी ध्यान दें। श्री सिंह कहा कि प्रतिमा की सुरक्षा का प्रशासन पुख्ता इंतजाम करें ताकि भविष्य में ऐसी घटना दुबार ना हो। दिलीप सिंह ने भगवान बिरसा की प्रतिमा पर माला पहनाकर एवं अंगवस्त्र ओढ़ाया, मौक़े पर ओमप्रकाश गुप्ता, ब्रिजन राम, पिंटू मोदी, मना राम, विवेक कुमार, राजा राम, रंजीत कालिंदी, कुंदन कुमार उपस्थित थे।

बजट सत्र में झरिया विधायक ने प्रश्नकाल के दौरान सदन में आयुष्मान भारत योजना का मामला उठाया

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद/ रांची): शुक्रवार को विधानसभा के बजट सत्र में झरिया विधायक रागिनी सिंह ने प्रश्नकाल के दौरान सदन में आयुष्मान भारत योजना का मामला उठाते हुए कहा कि धनबाद जिला सहित राज्य के अन्य जिलों में आमजनों को चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु अनेकों सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों के साथ निजी अस्पतालों में आमजनों के बेहतर चिकित्सा उपलब्ध कराने को लेकर आयुष्मान भारत योजना से जोड़ा गया है लेकिन धनबाद में ऐसे कई सरकारी व निजी स्वास्थ्य केंद्र है जिनमें आयुष्मान भारत योजना के चिकित्सीय लाभ से आमजन को वंचित रखा जा रहा है व उनका इलाज नहीं किया जा रहा है विधायक श्रीमती रागिनी सिंह ने कहा कि वो माननीय मंत्री जी के जवाब से असंतुष्ट है उनके द्वारा दिए गए जवाब में यह स्पष्ट नहीं है कि धनबाद जिले में कितने सरकारी व निजी अस्पतालों में आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिल रहा है स्वास्थ्य विभाग धनबाद जिले के उन सभी सरकारी व निजी अस्पतालों की एक सूची जारी करे जहां इस योजना का लाभ लिया जा सकता है धनबाद जिले में ज्यादातर अस्पतालों में लोगों को योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है इसपर सरकार को गंभीरता दिखाते हुए स्वास्थ्य विभाग को जल्द से जल्द सूचीबद्ध अस्पतालों में योजना को क्रियान्वित करने का आदेश दी जानी चाहिए निजी अस्पतालों को आयुष्मान भारत योजना के तहत किए गए इलाज का भुगतान सरकार द्वारा समय पर नहीं दिए जाने से निजी अस्पताल इलाज करने को मना कर देते है श्रीमती सिंह ने कहा कि राज्य सरकार को केंद्र सरकार की योजना से जुड़ने में दिलचस्पी नहीं दिखाई पड़ती जिसके कारण योजना को राज्य में प्रभावी ढंग से लागू करने में कमी रह जाती है और इसकी विभागीय जांच करा कर जिन सूचीबद्ध अस्पतालों में आयुष्मान भारत योजना का पालन नहीं हो रहा उनपर कार्यवाही की जाए। वही दूसरी ओर प्रश्नकाल के दूसरे पाली में झरिया विधायक श्रीमती रागिनी सिंह ने सीधे मुख्य मंत्री हेमंत सोरेन से सुरक्षा मामले सवाल करते हुए कहा कि जिले जब एक विधायक सुरक्षित नहीं तो आम जनता क्या सुरक्षित रहेगी क्योंकि अपराधी खुलेआम फायरिंग कर वहां से निकल जाते है और दोषियों पर कार्यवाही तक नहीं हो रही ऐसे में आम जनता कितनी सुरक्षित रहेगी विधायक श्रीमती रागिनी सिंह ने माननीय मुख्यमंत्री से इस मामले में स्वयः संज्ञान ले जिले में सुरक्षा व्यवस्था को चाक चौबंद किए जाने को लेकर गंभीरता दिखाए जाने की मांग की है ताकि जिले के लोगो को भयमुक्त वातावरण मिले, जिसपर माननीय मुख्यमंत्री ने इस विषय पर धनबाद जिले के प्रशानिक विधि व्यवस्था को सुदृढ़ किए जाने की बात कही।

51 कुंवारी कन्याओं की पूजन के पश्चात महाभण्डारा का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): तिसरा, बलियापुर प्रखंड के अलकड़ीहा, स्थित पतालेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में महाशिवरात्री के शुभ अवसर पर हर वर्ष की भाती इस वर्ष भी भोलेनाथ व अन्य देवी देवताओ का पूजा अर्चना, कर महा प्रसाद का भोग लगाई गई। 51 कुंवारी कन्याओं का महिलाओ द्वारा प्रथम चरण में पांव पखारने के पश्चात अंग बस्त्र श्रृंगार युक्त कन्याओं का पूजन कर प्रसाद ग्रहण कराई गई, इसके बाद पश्चात आम उपस्थित गणमान्य भग्तों के लिए महाप्रसाद वितरण का आयोजन देर रात्री तक चलता रहा। मंदिर के पूजारी ने बताया की, जात पात पूछे नहीं कोई, हरी के भजे सो हरी के होई। धनबाद जिले के शिव भक्तों के सहयोग से इस तरह का विशाल महाभण्डारा का आयोजन वर्षों से लगातार हो रहा हैं। सैकड़ो भग्त गण के सहयोग 24 आवर्श सक्रिय रूप से तन मन और धन से समर्पित शिव भग्तों के अटूट श्रध्दा से व ग्राम वासियों का सहयोग मंदिर प्रांगण मे देखने लायक रहा। सैकड़ो की संख्या में जो भी भग्त उपस्थित हुए श्रद्धा से बैठ कर महाप्रसाद ग्रहन कर संतुष्ट हो कर अपने परिजनो के लिए भी अन्य पात्र में लेकर दिन भर आते और जाते रहें। इस अवसर पर तिसरा थानेदार सुमन कुमार अपने दल बल के साथ शिव भग्तों की सेवा में तत्पर रह कर सहयोग किया। मंदिर कमिटि के पूजारी शंदीप शास्त्री अमित मुखर्जी बसंत ठाकुर नविण मुखर्जी प्रविर मुखर्जी मंदिर कमिटि के अध्यक्ष जयन्ती सिंह चण्डीचरण मोदक कुलदीप साव हीरालाल मोदक दीपक मोदक शिदधेश्वर मोदक नरेश महतो व अन्य भग्त सेवा में लगे रहें।

पतलबाड़ी के दामोदर वैली टीचर ट्रेनिंग कॉलेज में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): चिरकुंडा, इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन में विभिन्न प्रदेशों से पहुंचे शिक्षाविद दामोदर वैली टीचर ट्रेनिंग कॉलेज पतलबाड़ी में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन शुक्रवार को किया गया।

जिसमें विभिन्न प्रदेशों से दर्जनों शिक्षामित्र पहुंचे, सभी शिक्षाविदों का स्वागत कॉलेज प्रबंधन द्वारा भव्य तरीके से किया गया। अतिथियों को आते ही उनका स्वागत फुलवर्षा कर किया गया, सभी अतिथियों ने विनोद बिहारी महतो के तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी, उसके बाद अतिथियों को पूरे सम्मान के साथ सभागार में ले जाया गया, उसके बाद दीप प्रचलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। जहां पर कॉलेज के शिक्षकों द्वारा अंग वस्त्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया।

सभी अतिथियों ने विमोचन किया, इंक्लूसिव लर्निंग एंड स्पेशल एजुकेशन इन ग्लोबल कंट्री का विषय पर आयोजित सेमिनार में विभिन्न प्रदेशों से आए, शिक्षाविदों ने अपने-अपने विचार रखें, वही कार्यक्रम में पहुंचे मुख्य अतिथि आरएस मोर कॉलेज के प्राचार्य प्रवीण कुमार सिंह ने कहा, कि इस तरह के संगोष्ठी का आयोजन आज के युग में काफी आवश्यक है। ऐसे संगोष्ठी से न सिर्फ अपने राज्य के बलकी अंतरराष्ट्रीय स्तर के वक्ताओं को सुनने का मौका मिलता है। यहां के वर्तमान समय में शिक्षा में काफी बदलाव आया है। शिक्षा पर सरकार भी काफी ध्यान दे रही है। दिव्यांग जनों के लिए भी अलग से प्रबंध किया गया है। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में कहां की आज के समय में यह बहुत बड़ी चुनौती है। खासकर शिक्षकों के लिए यह चुनौती होगी कि छात्र खुद से उत्तर दे रहे हैं,या गूगल के द्वारा उसे अपनाया गया है। वहीं उन्होंने विश्व गुरु के बारे में पूछे जाने पर कहां की सिर्फ कहने से विश्व गुरु नहीं होगा, बल्कि उसके लिए देश के हर व्यक्ति को समर्पण भाव से काम करना होगा।

आरओ प्लांट चल रहा था निगम के सप्लाई पानी से, स्टैंड पोस्ट से कई घरों में दिया गया था पानी कनेक्शन

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (धनबाद): नगर निगम की इंफोर्समेंट टीम ने देव विहार रेसीडेंसी, झारूडीह में अवैध जल संयोजन की जांच की. सात से आठ अपार्टमेंट की जांच में कई में गड़बड़ी मिली, इसके अलावा एक आवासीय परिसर में सप्लाई पानी से आरओ प्लांट की जांच की गयी. सभी को कागजात के साथ नगर निगम में बुलाया गया है. जांच के दौरान झारूडीह में स्टैंड पोस्ट से कई घरों में पानी कनेक्शन का भी मामला पकड़ा गया है.

निगम के अधिकारी के मुताबिक अवैध जल संयोजन के खिलाफ पांच टीम गठित की गयी है. पहले चरण में शहर के वार्ड नंबर 20 से वार्ड 24 तक स्पेशल ड्राइव चलाया जा रहा है. अवैध जल संयोजन के अलावा जलकर बकायेदारों पर झारखंड म्यूनिसिपल एक्ट के तहत कार्रवाई होगी. देव विहार रेसीडेंसी, झारूडीह में जो मामला सामने आये हैं, सभी को कागजात के साथ बुलाया गया है. इसके बाद आगे की कार्रवाई की जायेगी. शहरी क्षेत्र में 38 हजार वैध कनेक्शन हैं. इनमें मात्र 22 हजार उपभोक्ताओं के घरों से वाटर टैक्स का पैसा नगर निगम को मिलता है. 16 हजार उपभोक्ता वर्षों से वाटर टैक्स का भुगतान नहीं कर रहे हैं. जांच टीम में सिटी मैनेजर, सहायक अभियंता, कनीय अभियंता व पाइप लाइन इंस्पेक्टर के अलावा एजेंसी को टीम थी,

कुम्हारपट्टी में सेप्टी टैंक का पानी बहाने पर दो हजार रुपये जुर्माना:
कुम्हारपट्टी में सेप्टी टैंक का पानी सड़क पर गिराने पर रणजीत कुमार नामक व्यक्ति पर दो हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है. फूड इंस्पेक्टर अनिल कुमार ने बताया कि स्थानीय लोगों की शिकायत पर जांच की गयी. जांच में सेप्टी टैंक का पानी सड़क पर गिराने का मामला पकड़ा गया।

बिहार में कांग्रेस को अधिक सीटों का मोह!

बिहार चुनाव के लिए कांग्रेस इंडिया गठबंधन में रहेगी या अकेली लड़ेगी?

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: हालिया हरियाणा व दिल्ली चुनाव कांग्रेस ने अकेला लड़ा पर हार के बाद भी उसका जोश कम नहीं हुआ है। अब जल्द ही बिहार के चुनाव होने है। यक्ष प्रश्न है कि हाल के चुनाओं में हार के बाद भी वह बिहार में अकेला लड़ना चाहेगी या इंडिया गठबंधन के साथ उसका जुडाव कायम रहेगा। यह प्रश्न इस कारण भी उठ रहा है कि कांग्रेस बिहार में अपना कुनबा बढ़ाने में लगी है। हाल ही में जनता दल यूनाइटेड के पूर्व सांसद अली अनवर ने शुक्रवार को कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। जैसा कि तक़रीबन होता है कांग्रेस में शामिल होने पर उन्होंने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और सांसद राहुल गांधी से मुलाकात के दौरान उनकी कुछ बातों ने काफी आकर्षित किया। जिसके बाद उन्होंने कांग्रेस परिवार में शामिल होने का फैसला किया। महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष अलका लांबा ने कहा, "राहुल गांधी ने हाल ही में बिहार का दौरा किया और एक जनसभा की। जो लोग पूछ रहे थे कि कांग्रेस बिहार में कब सत्ता संभालेगी, उन्हें अब जवाब मिल गया है। राहुल गांधी के आने से यह स्पष्ट है कि कांग्रेस ने राज्य में 'मिशन बिहार' शुरू कर दिया है। मिशन बिहार के तहत बिहार से भाजपा और जदयू को बाहर का रास्ता दिखाएंगे।"

कांग्रेस नेता अलका लांबा चुनाव तक बिहार में जमी रहेगी। उसने कहा कि बिहार के 40 लोकसभा क्षेत्रों में महिला कांग्रेस को मजबूत करने का काम किया जाएगा। बिहार चुनाव तक मैं राज्य में ही रहूंगी। इससे पहले गुरुवार को पटना पहुंची अलका लांबा ने बिहार सरकार पर तंज कसते हुए कहा था कि 2025 में हम सरकार बदल देंगे। उन्होंने ऐलान किया कि वह हर जिले और लोकसभा क्षेत्र का दौरा करेंगी, निरंतर बैठकें होंगी और मौजूदा सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए जो भी जरूरी होगा, वह करेंगी। इस साल एक ही राज्य हमारा लक्ष्य है, वह है बिहार। उन्होंने सदस्यता अभियान भी तेज करने की बात कही। इसमें कहीं भी इंडिया गठबंधन की बात नहीं है।

इसी बीच कांग्रेस नेता कृष्णा अल्लावरु ने सोमवार को कहा कि कांग्रेस पार्टी मजबूत है और आगे लोगों से मिलकर रणनीति बनाएंगे। पटना में पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सोमवार को बिहार के दौरे को लेकर कहा कि प्रधानमंत्री आएं-जाएं, कांग्रेस अपना काम करती रहेगी। बिहार कांग्रेस प्रभारी ने बिहार के दौरे को लेकर कहा कि पार्टी के नेता और कार्यकर्ता से मिलकर आगे की रणनीति बनाने का काम करेंगे। बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव में कितनी सीटों पर लड़ने की योजना को लेकर उन्होंने सीधा कोई जवाब नहीं दिया। हालांकि उन्होंने यह जरूर कहा कि आगे मिलजुल कर रणनीति बनाएंगे। बिहार में दिल्ली की तरह अकेले चुनाव लड़ने को लेकर उन्होंने कहा कि अभी तो चर्चा चल रही है। लोगों से मिलकर रणनीति बनाएंगे।

दरअसल, कृष्णा अल्लावरु बिहार के कांग्रेस प्रभारी बनने के बाद सक्रिय नजर आ रहे हैं। अल्लावरु बिहार कांग्रेस प्रभारी नियुक्त होने के बाद 20 फरवरी को पहली बार पटना पहुंचे थे। कांग्रेस के नेता ने कहा था कि पार्टी की यह कमी रही है कि हम रेस के घोड़े को बारात में और बारात के घोड़े को रेस में लगा देते हैं, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। कार्यकर्ताओं को आश्वस्त करते हुए उन्होंने कहा कि वे जब तक बिहार के लोगों के साथ रहेंगे, तब तक जो कार्यकर्ता खून-पसीना लगाकर लड़ाई लड़ेगा, उसे सम्मान भी दिया जाएगा। उन्होंने हालांकि कार्यकर्ताओं को क्षेत्र में काम करने का संदेश देते हुए यह भी कहा कि लड़ाई सदाकत आश्रम में नहीं बल्कि मैदान में होगी। उन्होंने कहा कि गुटबाजी से कोई लड़ाई नहीं जीती जा सकती। बता दें कि आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस पूरा जोर लगा रही है। राहुल गांधी भी पिछले दिनों दो बार बिहार का दौरा कर चुके हैं।

दरअसल बिहार विधानसभा के पिछले चुनाव में मिली नाकामी, महागठबंधन की हार का विलेन बन जाने से सीख लेकर कांग्रेस इस बार चुनावी साल की शुरुआत के साथ ही एक्टिव मोड में आ गई। बिहार कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद डॉक्टर अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा है कि हमने 50 सीटें जीतने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने खुद भी यह स्वीकार किया है कि यह लक्ष्य आसान नहीं है लेकिन साथ ही यह भी कहा है कि ये नामुमकिन भी नहीं। अखिलेश प्रसाद ने दावा किया कि बिहार कांग्रेस के पक्ष में इस बार चौंकाने वाले नतीजे आएंगे।मिशन 50 के नारे, चौंकाने वाले नतीजों के दावे... इनके लिए कांग्रेस पार्टी को सबसे पहले अधिक सीटों पर चुनाव लड़ना होगा। 2020 के चुनाव नतीजों में 70 सीटों पर चुनाव लड़कर महज 27 फीसदी स्ट्राइक रेट के साथ 19 सीटें ही जीत पाई पार्टी को राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) इस बार अधिक सीटें देने का खतरा मोल लेगी? खासकर तब, जब महागठबंधन 110 सीटें जीतकर बहुमत के लिए जरूरी 122 के जादुई आंकड़े से महज 12 सीट पीछे रह गया था और विपक्षी गठबंधन की मात के लिए कांग्रेस के प्रदर्शन को कसूरवार ठहराया गया था।

मिशन 50 का नारा देने वाली कांग्रेस पार्टी के नेता भी यह समझ रहे हैं कि सीट शेयरिंग की टेबल पर अपनी डिमांड मनवाने की राह में पिछले चुनाव का प्रदर्शन उसकी राह का सबसे बड़ा रोड़ा रहने वाला है। यही वजह है कि पार्टी ने इस बार खास रणनीति बनाई है- प्लान 45. दरअसल, कांग्रेस ने 2015 के विधानसभा चुनाव में 41 सीटों पर चुनाव लड़ा था और 27 सीटें जीतने में सफल रही थी जो 1995 में 29 सीटों पर जीत के बाद बिहार चुनाव में पार्टी का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। कांग्रेस को इतनी सीटें लड़ने के लिए तब मिली थीं जब महागठबंधन में जेडीयू भी थी। 2020 के चुनाव से पहले कांग्रेस नेतृत्व अधिक सीटों की डिमांड पर अड़ गया।

हां-ना, हां-ना का दौर अंतिम वक्त तक चलता रहा और बात बनी तेजस्वी यादव की राहुल गांधी के साथ हुई बात के बाद। लालू यादव की पार्टी ने आखिरकार कांग्रेस को 70 सीटें देने पर हामी भर दी जो 2015 चुनाव के मुकाबले 29 ज्यादा थीं। सीटों की संख्या में कांग्रेस की चल गई लेकिन जब माइक्रो लेवल पर सीटों का आवंटन शुरू हुआ, ग्रैंड ओल्ड पार्टी के साथ यहीं पर खेल हो गया। कांग्रेस को जो सीटें दी गईं, उनमें से 45 ऐसी थीं जहां पार्टी पिछले चार चुनाव से जीत नहीं पाई थी। 70 में से 67 सीटों पर 2019 के लोकसभा चुनाव में एनडीए ने लीड किया था।आरजेडी ने कांग्रेस की 70 सीटों की डिमांड मान तो ली थी लेकिन ऐसी सीटें दे दी थीं जहां एनडीए का प्रभाव अधिक था। इससे सीट शेयरिंग में कांग्रेस भले ही आरजेडी के बाद दूसरे सबसे बड़े घटक का टैग हासिल करने में सफल रही हो, नतीजे आए तो पार्टी विलेन बन गई। इसके उलट, लेफ्ट पार्टियों ने 29 सीटों पर चुनाव लड़ा और 16 सीटें जीतने में सफल रही थीं। सीट शेयरिंग में लेफ्ट के हिस्से आई कई सीटें ऐसी थीं जहां परंपरागत रूप से कांग्रेस मजबूत रही है।

कांग्रेस के नेता भी जानते हैं कि इस बार आरजेडी 2020 चुनाव के स्ट्राइक रेट को आधार बनाकर पार्टी को कम से कम सीटें देना चाहेगी। लालू यादव की पार्टी के ऐसे किसी भी दांव से निपटने के लिए कांग्रेस पहले से ही होमवर्क में जुट गई है। इसके लिए पार्टी ने प्लान-45 बनाया है। कांग्रेस का फोकस इस बार सीटों के नंबर पर अधिक जोर लगाने से ज्यादा ऐसी सीटें पाने पर है जहां पार्टी की जमीन अपेक्षाकृत मजबूत है और जीत की संभावनाएं बन सकती हैं।कांग्रेस का नेतृत्व बिहार चुनाव के लिए मैदान में उतर आया है। बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह नेताओं के साथ चंपारण की जमीन पर उतर गए हैं। महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष अलका लांबा वैशाली में हैं। बिहार कांग्रेस के प्रभारी शाहनवाज आलम सीमांचल के पूर्णिया, अररिया और बेगूसराय में हैं। चुनाव में अभी काफी समय बचा है लेकिन पार्टी ने वार रूम के पुनर्गठन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है।

इन सारी कवायदों को कांग्रेस चुनावी तैयारी से जोड़ रही है। ऐसा ही है भी लेकिन सुस्त इमेज वाली पार्टी का इतना पहले एक्टिव मोड में आ जाना सीट शेयरिंग की टेबल पर जाने से पहले होमवर्क से जुड़ा भी बताया जा रहा है। कांग्रेस नेतृत्व की कोशिश है कि जमीनी आधार पर जीतने योग्य सीटें चिह्नित की जाएं और फिर उन्हें हासिल करने के लिए जोर लगाया जाए। बाकी, लालू यादव की अगुवाई वाली आरजेडी इस बार कांग्रेस को कितनी और कौन सी सीटें देती है, ये देखने वाली बात होगी। कांग्रेस अब गठबंधन में मजबूरी का हिस्सा बनने की बजाय मजबूत साझेदार की भूमिका निभाना चाहती है। पार्टी का मुख्य उद्देश्य अपनी पसंद की सीटें हासिल करना है, जिनकी उसे पिछली बार कमी रही थी। सूत्रों के अनुसार, यदि इस बार कांग्रेस को अपनी पसंद की सीटें मिलती हैं, तो वह कुछ सीटों पर समझौता करने के लिए तैयार हो सकती है। कांग्रेस अब आरजेडी पर दबाव बनाने के लिए अपनी ताकत का प्रदर्शन कर रही है ताकि सीट बंटवारे में उसे पूरी तरह से सम्मान मिल सके।

अभी तो विधानसभा चुनाव दूर है पर कांग्रेस नेताओं के अलग–अलग बयान दर्शाते है कि कांग्रेस कभी भी एकला चलो वाली राह भी अपना सकती है।

अशोक भाटिया

शिक्षा, साक्षरता और संस्कार राष्ट्र के विकास के मजबूत पहिए

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: शिक्षा और संस्कार किसी भी विकसित राष्ट्र की पृष्ठभूमि हो सकते हैं। एक शिक्षित राष्ट्र एक महान राष्ट्र बन सकता है। सुसंस्कृत देश को एक सभ्य शांत और शालीन राष्ट्र माना जाता है जो वैश्विक शांति स्थापना का पक्षधर होने की दिशा में निरंतर प्रगतिशील होता है। भारत देश की गिनती ऐसे ही सभ्य संस्कारी राष्ट्र के रूप में होती है और ऐसी भावना तथा संकल्पनाओं को हमने कई सोपानों में प्रमाणित भी किया है। सबसे पहले हमें शिक्षा और साक्षरता के मूल अंतर को पहचानना होगा। शिक्षा जीवन के महत्व, संकल्पना को निरूपित करती है वही साक्षरता मनुष्य के संपूर्ण जीवन को अंश मात्र से ही अपना पक्ष रखती हैं। शिक्षा व्यक्ति के संपूर्ण जीवन पद्धति को विकसित करने का जरिया तथा महत्वपूर्ण विकल्प है। जिसके अंतर्गत पढ़ना लिखना समझना चरित्र विकास बौद्धिक मानसिक मनोवैज्ञानिक आध्यात्मिक सभी पहलुओं में गुणात्मक विकास करने के लिए आवश्यक कारक है। साक्षरता में संस्कृतिक सभ्यता तथा अन्य माननीय जीवन की कल्पना उसे इसका कोई संबंध नहीं रह जाता है। साक्षरता सदैव रोजगार मूलक स्त्रियों से जुड़ी होती है। जबकि सभ्यता संस्कृति का विकास मानवी शिक्षा से ही संभव हो पाता है। शिक्षा हमें सभ्य होना सिखाती है। इसमें व्यक्ति के मनन, चेतना, सद्बुद्धि और विचारशीलता में वृद्धि करती है। ऐसा भी संभव होता है कि कई वर्षों के अध्ययन से व्यक्ति सभ्य और सुसंस्कृत नहीं हो पाता है। इसीलिए विचारकों ने शिक्षा और संस्कृति को अलग-अलग पैमाने से नापा है। सुसंस्कृत व्यक्ति सदैव संतुलित, शांत एवं नीति निर्णायक बन सकता है।पर कई उदाहरणों में ऐसा भी पाया गया है उच्च शिक्षित व्यक्ति उच्छृंखल हो सकता है. वर्तमान समय में उच्च शिक्षित और ज्यादा पढ़े लिखे अज्ञानियों की संख्या बहुतायत में है। ऐसा ज्यादातर तकनीकी शिक्षा के मामले में देखा गया है, इसीलिए उच्च शिक्षित व्यक्ति जो सद व्यवहार नहीं करता, उन्हें केवल साक्षर मान के शिक्षित व्यक्ति ना माना जाए। शिक्षा और संस्कृति तथा विरासत के मूल्य का आपस में गहरा संबंध है।जबकि साक्षरता का इससे बहुत दूर-दूर तक कोई लेना देना नहीं है। वैसे शिक्षा और संस्कृति के ज्ञान का प्रारंभिक गर्भावस्था से ही हो जाता है, अर्जुन पुत्र अभिमन्यु इस बात के बहुत बड़े उदाहरण है। महात्मा गांधी तथा अब्राहम लिंकन ने मनुष्य के चरित्र निर्माण एवं विकास के लिए माताओं का योगदान बहुत महत्वपूर्ण बताया है। परिवार की शिक्षा के बाद विद्यालयों की शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसमें अनुशासन, सहभागिता, समानता एवं नेतृत्व जैसे गुणों का समावेश होता है। पुस्तकों का ज्ञान व्यक्ति एवं व्यक्ति के जीवन में संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देता है। पर शिक्षक की भूमिका जिंदगी में बड़ी ही प्रेरणादाई होती है। यह कहा जाता कि बिना गुरु ज्ञान नहीं हो सकता है, लोकोक्ति सही भी है, शिक्षकों का मार्गदर्शन खेल खेलने से विकसित होने वाले मूल्य जैसे समूह की भावना, निष्पक्षता, ईमानदारी,साहस की भावना को परिष्कृत करती है। ऐसे कई उदाहरण हैं की बिना साक्षरता के व्यक्ति पूर्ण रूप से शिक्षित एवं सुसंस्कृत हो सकता है। अपने समय के महान चिंतक फिलासफर सुकरात ने कहा था कि मैं शिक्षित अथवा ज्ञानी इस अर्थ में हूं,कि मैं कुछ नहीं जानता। शिक्षा व्यक्ति के जीवन में अहंकार,लालच, हिंसा, कटुता आदि को नियंत्रित करने में मदद देती है। पुराण काल में रावण प्रकांड पंडित एवं साक्षर व्यक्ति माना जाता था पर स्त्री के अपहरण में उसका कृत्य अहंकार लालच लिप्सा उसकी साक्षरता को सार्थक नहीं कर पाई। पर आज के संदर्भ में जब आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है, साक्षरता ने शिक्षा की जगह वरीयता प्राप्त करना शुरू कर दिया है। यह माना जाता है जिस व्यक्ति के पास अच्छी नौकरी अच्छा पद और मोटी मोटी तनख्वाह है, उसका समाज ज्यादा ही सम्मान करने लगता है। इन्हीं कारणों से समाज मूल्य तथा संस्कृति के विकास को दरकिनार कर रोजगार मूलक साक्षरता को ही आज वरीयता देता है। और समाज उसे सिर आंखों पर बिठा के रखता है। इससे समाज के दीर्घकालिक सांस्कृतिक मूल्यों का हनन होता है, एवं क्षति भी होती है। और इस प्रक्रिया में साक्षरता पक्ष होने के कारण रोजगार साधन बन जाते हैं। एवं साधनों की परवाह न कर इसकी खुली अवहेलना हो लोग करने लगे हैं, और इसी कारण शिक्षा के क्षेत्र में नकल, फर्जीवाड़े,धन देकर नौकरी प्राप्त करना आदि की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। साक्षर तो घोटालेबाज केतन पारेख हर्षद मेहता एवं कुख्यात आतंकवादी ओसामा बिन लादेन भी थे, किंतु इनकी शिक्षा की सार्थकता समाज द्वारा सदैव नापसंद की गई एवं समाज इन्हें हेय दृष्टि से देखने लगा है। आज के संदर्भ में ऐसी शिक्षा या साक्षरता की आवश्यकता है, जो मानव जीवन में मूल्यों का विकास एवं मूल्यों की प्रतिबद्धता विकसित कर सके। जिससे समाजिक गिरते मूल्यों तथा विरासत की अवहेलना ना हो सके। बिना मूल्यों के बिना संस्कृतिक विचारधारा के साक्षर होना ठीक उसी तरह है जैसे किसी बंदर के हाथ में बंदूक या उस्तरा देना है। हमें आज नैतिक साक्षरता देने की आवश्यकता होगी, जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास विरासत की रक्षा तथा मानवीय संवेदनाओं का संपुट हो, जो व्यक्ति को एक अच्छा इंसान बना सकें।

संजीव ठाकुर
स्तंभकार चिंतक, लेखक
रायपुर, छत्तीसगढ़

जबान की रफ्तार और घोड़े की लगाम

जबान रेसकोर्स में, घोड़ा कंट्रोल में

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: आदमी की सबसे बड़ी खोज क्या है? चक्का? बिजली? अंतरिक्ष यान? नहीं साहब, उसकी सबसे बड़ी खोज है घोड़े की लगाम! घोड़ा इधर-उधर भटके, बगल में खड़ा होकर हरी घास चबाने लगे, या भूल से गलत गली में घुस जाए, तो बस एक झटके में रास खींचो और उसे सीधा कर दो। लेकिन अपनी जबान? अरे, उसे तो बेलगाम छोड़ रखा है, जैसे कोई जंगली घोड़ा हो जो न सवार की सुनता हो, न रास्ते की परवाह करता हो। घोड़े की लगाम कसने में तो उस्ताद है इंसान, लेकिन अपनी जुबान पर लगाम? वो तो बस सपने की बात है—सपना भी ऐसा जो सुबह होते ही टूट जाए और बिस्तर पर सिर्फ खाली तकिया रह जाए।

दुनिया के हर कोने में चले जाइए—गली, मोहल्ला, बाज़ार, दफ्तर, या संसद का मैदान—हर जगह आपको घोड़े से ज़्यादा बेलगाम जबानें दौड़ती नज़र आएँगी। कोई किसी की इज्ज़त को चटनी की तरह पीस रहा है, तो कोई किसी के चरित्र को कचरे के ढेर में बदल रहा है। और अगर सोशल मीडिया पर कदम रखें, तो लगेगा कि घोड़े की रेस तो पुरानी बात हो गई, अब असली दौड़ है कीबोर्ड की उंगलियों और जुबान की रफ्तार की! यहाँ हर शख्स खुद को शब्दों का सिकंदर समझता है। तथ्य चाहिए? अरे, वो किस खेत की मूली है! प्रमाण चाहिए? उसकी क्या ज़रूरत! बस बोल दो, ट्वीट कर दो, मीम बना दो, ट्रोल कर दो—जुबान की लगाम तो ढीली ही रहने दो, घोड़े को तो देख लेंगे बाद में।

अब ज़रा राजनीति के रणक्षेत्र में झाँकिए। यहाँ तो शब्दों की तलवारें ऐसी चलती हैं कि असली तलवार भी शरमा जाए। चुनाव का मौसम आए नहीं कि नेताओं की जबानें बेलगाम घोड़ों की तरह दौड़ पड़ती हैं। एक-दूसरे पर तंज कसना, झूठे वादों की बारिश करना, और वोटरों को सपनों के महल दिखाना—इन सब में इनकी जबान को कोई रोक नहीं सकता। मज़े की बात ये कि अगर घोड़ा तेज़ भागे तो उसे काबू करने के लिए पूरा ज़ोर लगा देंगे, लेकिन जबान की रफ्तार? उसे तो और हवा मिले, तभी तो शान बढ़े! "हमने तो ऐसा बोल दिया कि हवाएँ थम गईं"—वाह रे वाह, ऐसा गर्व कि घोड़ा भी सोचे, "मुझ पर इतना भरोसा क्यों नहीं करते ये लोग?"

घर की बात करें तो वहाँ भी यही तमाशा है। सास-बहू की तू-तू-मैं-मैं हो या भाई-भाई का हिसाब-किताब, सब जुबान की मेहरबानी से। एक बार कुछ उल्टा-सीधा बोल दिया, फिर चाहे रिश्ते टूटें, घर बिखरे, या सालों की दोस्ती धूल में मिल जाए—कोई गम नहीं। घोड़ा अगर गिर जाए तो उसे उठाने की फिक्र होगी, लेकिन जुबान का गिरना? अरे, आजकल तो उस पर मेडल मिलता है—"मैं जो सोचता हूँ, वही बोलता हूँ, मुझे किसी की परवाह नहीं!" शाबाश, ऐसी बेलगाम जबान पर गर्व कि घोड़ा भी मुड़कर देखे और कहे, "भाई, मुझे तो कम से कम लगाम मिली है, तुम्हारा क्या हाल है?"

और सोशल मीडिया? ये तो बेलगाम जबानों का असली अड्डा है। सुबह आँख खुलते ही लोग शब्दों के तीर-कमान लेकर मैदान में कूद पड़ते हैं। कोई सरकार को कोस रहा है, कोई समाज को सबक सिखा रहा है। कोई किसी फिल्म स्टार की निजी ज़िंदगी में घुसकर कीचड़ उछाल रहा है, तो कोई किसी अनजान इंसान की इज्जत को सरेराह नीलाम कर रहा है। स्क्रीन की आड़ में ये लोग शब्दों के गोले दागते हैं, मानो दुनिया का हर दुख इन्हीं की जुबान से ठीक होगा। लेकिन हाँ, घोड़े की लगाम कसने में एक सेकंड की देरी नहीं करेंगे—आखिर असली मर्दानगी तो घोड़े को काबू करने में है, जुबान को कौन पूछता है?

अब घोड़े की नज़र से देखें तो बेचारा क्या सोचेगा? सुबह से शाम तक इंसान का बोझ ढोता है, उसकी मर्ज़ी से दौड़ता है, लगाम खिंचवाता है। अगर ज़रा सा बगावत करे, तो कोड़े पड़ते हैं, सज़ा मिलती है। लेकिन जब इंसान अपनी जबान से किसी का गला घोंट दे, किसी का घर उजाड़ दे, तो उसे "ईमानदार" और "निडर" का तमगा मिल जाता है। घोड़ा सोचता होगा, "काश मेरी भी जबान होती, मैं भी कुछ बोलता, शायद तब ये लोग मुझे कम सताते।"

ये विडंबना नहीं तो क्या है? इंसान ने चाँद को छू लिया, समुद्र को चीर दिया, मशीनों को गुलाम बना लिया, लेकिन अपनी जबान को काबू करना उसे आज तक नहीं आया। घोड़े को कंट्रोल कर सकता है, ट्रैफिक को मैनेज कर सकता है, मौसम का हाल बता सकता है, लेकिन अपनी जुबान? वो तो आज़ाद परिंदा है—जहाँ चाहे उड़े, जिसे चाहे चोंच मार दे।

समाज में नियम-कायदे ढेर सारे हैं। गाड़ी की स्पीड लिमिट है, दफ्तर में ड्रेस कोड है, स्कूल में होमवर्क का बोझ है। लेकिन जबान की रफ्तार के लिए? कोई नियम नहीं, कोई लगाम नहीं। घोड़े को काबू करने की ट्रेनिंग स्कूलों में नहीं सिखाई जाती, लेकिन उसकी लगाम कसने का हुनर हर कोई जानता है। पर अपनी जबान को काबू करना? वो तो कोई किताब में नहीं लिखा, न कोई गुरु सिखाता है।

कभी-कभी सोचता हूँ, काश इंसान अपनी जबान को भी घोड़े की तरह कंट्रोल करना सीख लेता। काश उसे अहसास होता कि शब्दों से किसी की ज़िंदगी बन भी सकती है और बिगड़ भी सकती है। काश वो घोड़े की लगाम कसने से पहले अपनी जबान पर भी एक नज़र डाल लेता। लेकिन ये सब सोचकर क्या फायदा? इंसान वही करेगा जो उसकी फितरत है—घोड़े की लगाम कसेगा, और अपनी जबान को आज़ाद छोड़ेगा। और घोड़ा बेचारा दूर खड़ा ये सब देखता रहेगा, सोचता रहेगा—"काश ये लोग अपनी जबान पर भी वही लगाम कस पाते, जो मेरे मुँह में डालते हैं!"

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"
बड़वानी (मप्र)

चुनौती है बढ़ता तापमान बदलता वायुमंडलीय पैटर्न

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: वैश्विक समुद्री बर्फ में खतरनाक गिरावट को रोकने के लिए जलवायु कार्यवाही निर्णायक होनी चाहिए। अनुकूली नीतियों और बेहतर ध्रुवीय निगरानी से जलवायु लचीलापन बढ़ेगा। एक टिकाऊ भविष्य उत्सर्जन को कम करने और ग्रह के नाजुक क्रायोस्फीयर की रक्षा करने के लिए सभी के दृढ़ संकल्प पर निर्भर करता है। कई समुदायों में जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए तैयारी का अभाव है। भविष्य में जलवायु सम्बंधी जोखिमों को झेल सकने वाले लचीले बुनियादी ढांचे में निवेश करना समुदायों के लिए महत्त्वपूर्ण है। हमारे समाज के सभी सदस्यों, जिनमें शिक्षक, जोखिम संचारक, आपातकालीन प्रबंधक और नगर नियोजक शामिल हैं, को इस बारे पर्यावरणीय शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से कोई भी व्यक्ति सीख सकता है कि जलवायु परिवर्तन के लिए कैसे तैयार रहा जाए।

पृथ्वी की जलवायु को नियंत्रित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक ध्रुवीय क्षेत्रों में तैरती समुद्री बर्फ की मात्रा है। हालाँकि, बदलते वायुमंडलीय पैटर्न और बढ़ते तापमान के कारण, यह घटकर 15-76 मिलियन वर्ग किमी के रिकॉर्ड निम्न स्तर पर आ गया है। वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है, समुद्री धाराएँ अशांत हो रही हैं, तथा इस गिरावट के कारण चरम मौसम की घटनाएँ और भी बदतर हो गई हैं। दुनिया भर में चरम मौसम की घटनाएँ पृथ्वी की जलवायु में परिवर्तन से प्रभावित हो रही हैं। भीषण वन्य आग, वर्षों तक चलने वाला सूखा, भारी वर्षा, भयंकर बाढ़, भूमि और समुद्र में रिकॉर्ड तोड़ गर्मी की लहरें, तथा तूफानों के दौरान व्यापक बाढ़ की आवृत्ति और तीव्रता सभी बढ़ रही है। औद्योगिक क्रांति के बाद से, मानवीय गतिविधियों विशेष रूप से जीवाश्म ईंधनों के जलने के कारण ग्रीनहाउस गैसों की वायुमंडलीय सांद्रता में तीव्र वृद्धि हुई है। मीथेन, कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसें एक कम्बल की तरह काम करती हैं, जो गर्मी को रोक लेती हैं और जैसे-जैसे उनकी सांद्रता बढ़ती है, पृथ्वी को गर्म करती हैं। परिणामस्वरूप पृथ्वी पर हवा और महासागर गर्म हो जाते हैं। भूमि पर बर्फ पिघलती है, मौसम का पैटर्न बदलता है, तथा जल चक्र इस तापमान वृद्धि से प्रभावित होता है, जिससे चरम मौसम की स्थिति और खराब हो जाती है। जलवायु परिवर्तन हमारे समाज को अनेक तरीकों से प्रभावित करता है।

सूखे से मानव स्वास्थ्य और खाद्य उत्पादन पर असर पड़ सकता है। बाढ़ से बुनियादी ढांचे और पारिस्थितिकी तंत्र को नुक़सान पहुँच सकता है और बीमारी फैल सकती है। खाद्य उपलब्धता में परिवर्तन और श्रमिक उत्पादकता को सीमित करने के अलावा, सूखा, बाढ़ और अन्य मौसम सम्बंधी घटनाओं के कारण उत्पन्न मानव स्वास्थ्य समस्याएँ भी मृत्यु दर को बढ़ाती हैं। हमारी परिवहन और संचार प्रणालियों के भौतिक बुनियादी ढांचे में सड़कें, पुल, बंदरगाह, विद्युत ग्रिड, ब्रॉडबैंड इंटरनेट और अन्य घटक शामिल हैं। इसे अक्सर कई वर्षों तक चलने के लिए डिज़ाइन किया जाता है। इसलिए अधिकांश समुदायों में बुनियादी ढांचे का निर्माण जलवायु परिवर्तन पर विचार किए बिना किया गया था। वर्तमान बुनियादी ढांचा हवा, बर्फ, बाढ़, भारी बारिश या तापमान में उतार-चढ़ाव जैसी गंभीर मौसम स्थितियों को संभालने में सक्षम नहीं हो सकता है। इन घटनाओं के प्रभाव कई अलग-अलग रूप ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, उच्च तापमान के कारण घर के अन्दर अधिक ठंडक की आवश्यकता होती है, जिससे ऊर्जा ग्रिड पर दबाव पड़ सकता है। अप्रत्याशित रूप से अत्यधिक वर्षा के कारण आने वाली बाढ़, जो तूफानी जल निकासी क्षमता से अधिक होती है, प्रमुख मार्गों, व्यवसायों और राजमार्गों को बंद कर सकती है।

समुद्र स्तर में वृद्धि के कारण तटीय अवसंरचना, जैसे जल आपूर्ति, सड़कें, पुल और बहुत कुछ, खतरे में हैं। चूंकि बहुत-सी आबादी तटीय क्षेत्रों में रहती है, अतः इससे होने वाले जोखिम से लाखों लोग प्रभावित होंगे। इसके अलावा, समुद्र स्तर में वृद्धि से तटीय कटाव और उच्च ज्वार के कारण बाढ़ आ सकती है। शोध से पता चलता है कि कुछ समुदाय वर्ष 2100 तक समुद्र तल पर या उससे नीचे पहुँच जाएंगे। अब यह उन पर निर्भर करेगा कि वे क्या करें। प्रबंधित वापसी नामक प्रक्रिया के दौरान, समुदाय संभवतः तटरेखा से दूर चले जाएंगे और अपने बुनियादी ढांचे में बदलाव करेंगे। समुद्री बर्फ में वैश्विक गिरावट के लिए मुख्य रूप से महासागरीय ऊष्मा परिवहन ज़िम्मेदार है। जब गर्म महासागरीय धाराएँ ध्रुवीय क्षेत्रों में प्रवेश करती हैं, तो समुद्री बर्फ आधार पर तेजी से पिघलती है। अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (एएमओसी) द्वारा गर्म पानी आर्कटिक में लाया जाता है, जो बर्फ की स्थिरता को कम करता है। ये जलवायु पैटर्न समुद्री और वायुमंडलीय स्थितियों के साथ-साथ बर्फ के निर्माण और पिघलने की दर को भी प्रभावित करते हैं। 2015-2016 की अल नीनो घटना ने समुद्र के तापमान में वृद्धि करके अंटार्कटिका के समुद्री बर्फ को रिकॉर्ड निम्न स्तर पर पहुँचा दिया। बड़े ज्वालामुखी विस्फोटों से एरोसोल निकलते हैं, जिनमें अस्थायी रूप से वायुमंडल को ठंडा करने की क्षमता होती है, लेकिन वे दीर्घकालिक रूप से महासागरों के गर्म होने में भी योगदान देने वाले कारक हो सकते हैं।

2022 के हंगा टोंगा विस्फोट से जल वाष्प समताप मंडल में छोड़ा गया, जिससे समय के साथ वार्मिंग प्रभाव में संभावित रूप से वृद्धि हुई। अधिक शक्तिशाली तूफानों के कारण नाजुक समुद्री बर्फ टूट जाती है, जिससे पिघलने और समुद्री धाराओं के कारण उसके प्रभावित होने की संभावना बढ़ जाती है। 2024 में बेरेंट्स और बेरिंग सागर में तूफानों के कारण बर्फ टूट जाएगी, जिसके परिणामस्वरूप आर्कटिक सागर में बर्फ का आवरण रिकॉर्ड निम्न स्तर पर पहुँच जाएगा। मीथेन औरकार्बन डाइऑक्साइड वायुमंडल में ऊष्मा को रोकते हैं, जिससे वैश्विक तापमान बढ़ता है और ध्रुवीय बर्फ पिघलने की प्रक्रिया तेज हो जाती है। औद्योगिक क्रांति के कारणकार्बन डाईऑक्साइड के स्तर में नाटकीय वृद्धि के कारण, आर्कटिक समुद्री बर्फ 1981 से प्रति दशक 12-2% की दर से घट रही है। महासागर का अम्लीकरण और वायुमंडलीय तापमान में वृद्धि कोयला, तेल और गैस के जलने से निकलने वाले प्रदूषकों के कारण होती है। आर्कटिक प्रवर्धन वह प्रक्रिया है जिसके तहत औद्योगिक गतिविधियों से उत्पन्न ऊष्मा-अवशोषित उत्सर्जन के कारण आर्कटिक वैश्विक औसत से चार गुना अधिक तेजी से गर्म हो जाता है। जब वन नष्ट होते हैं, तो कम कार्बन अवशोषित होता है और जब शहर बढ़ते हैं, तो अधिक गर्मी बरकरार रहती है, जो वायुमंडलीय परिसंचरण को प्रभावित करती है। समुद्री बर्फ का क्षरण और वैश्विक तापमान वृद्धि अप्रत्यक्ष रूप से अमेज़न में वनों की कटाई के कारण होती है, जिससे कार्बन अवशोषण में कमी आती है। आर्कटिक क्षेत्र में ड्रिलिंग और बढ़ती समुद्री गतिविधियाँ समुद्री बर्फ के पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करती हैं और प्रदूषण तथा गर्मी पैदा करती हैं, जो स्थानीय तापमान में वृद्धि में योगदान करती हैं। इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की खोज के बाद आर्कटिक क्षेत्र में हुई तीव्र गति से इस तंत्र को और अधिक बल मिलने के परिणामस्वरूप ध्रुवीय बर्फ को अधिक क्षति पहुँची है।

पृथ्वी पर समुद्री बर्फ कम होने पर महासागर अधिक गर्मी अवशोषित करते हैं, जिससे एल्बिडो या परावर्तकता कम हो जाती है, तथा तापमान और भी अधिक बढ़ जाता है। आर्कटिक के घटते एल्बिडो प्रभाव के कारण जलवायु परिवर्तन में तेजी आई है, जिसके कारण ध्रुवीय क्षेत्र शेष विश्व की तुलना में दोगुनी तेजी से गर्म हो रहे हैं। बर्फ पिघलने से निकलने वाला ताज़ा पानी लवणता को कम करता है और गहरे समुद्र में परिसंचरण को धीमा कर देता है, जिसका जलवायु विनियमन पर प्रभाव पड़ता है। कमजोर हो रहे अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (एएमओसी) से हिंद महासागर क्षेत्र, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में मौसम के पैटर्न में बदलाव आने की संभावना है। अप्रत्यक्ष रूप से, समुद्री बर्फ पिघलने से भूमि आधारित बर्फ की चादरों के पिघलने की गति बढ़ जाती है, जिससे दुनिया भर में समुद्र का स्तर बढ़ जाता है। जब सारी बर्फ पिघल जाएगी, तो ग्रीनलैंड की बर्फ की चादर समुद्र के स्तर को लगभग 23 फीट तक बढ़ा देगी। तापमान में परिवर्तन के कारण तूफान, सूखा और गर्म लहरें बढ़ रही हैं, जिससे वायुमंडलीय परिसंचरण प्रभावित हो रहा है। जेट स्ट्रीम आर्कटिक बर्फ के पिघलने से प्रभावित होती है, जिसके कारण उत्तरी अमेरिका और यूरोप में लंबे समय तक गर्म लहरें चलती हैं। समुद्री बर्फ के पिघलने से खाद्य श्रृंखलाएँ गड़बड़ा जाती हैं, जिससे मत्स्य पालन और समुद्री जीवन खतरे में पड़ जाता है, जो ठंडे पानी के आवासों पर निर्भर रहते हैं। संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हो रहा है, क्योंकि अंटार्कटिका में क्रिल की आबादी घट रही है तथा ध्रुवीय भालू और सील अपने शिकार के मैदान खो रहे हैं।

वैश्विक समुद्री बर्फ में खतरनाक गिरावट को रोकने के लिए जलवायु कार्यवाही निर्णायक होनी चाहिए। ध्रुवीय संहिता जैसे वैश्विक जलवायु संकल्पों को मज़बूत करके, स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन को बढ़ावा देकर तथा भू-इंजीनियरिंग पहलों को वित्तपोषित करके बर्फ की हानि को कम किया जा सकता है। अनुकूली नीतियों और बेहतर ध्रुवीय निगरानी से जलवायु लचीलापन बढ़ेगा। एक टिकाऊ भविष्य उत्सर्जन को कम करने और ग्रह के नाज़ुक क्रायोस्फीयर की रक्षा करने के लिए सभी के दृढ़ संकल्प पर निर्भर करता है। कई समुदायों में जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए तैयारी का अभाव है। वैज्ञानिक इस बात पर शोध कर रहे हैं कि वर्तमान और भविष्य में जलवायु परिवर्तन से समुदायों पर किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है, तथा वे सर्वोत्तम तरीकों का सुझाव दे सकते हैं। भविष्य में जलवायु सम्बंधी जोखिमों को झेल सकने वाले लचीले बुनियादी ढांचे में निवेश करना समुदायों के लिए महत्त्वपूर्ण है। हमारे समाज के सभी सदस्यों, जिनमें शिक्षक, जोखिम संचारक, आपातकालीन प्रबंधक और नगर नियोजक शामिल हैं, को इस बारे पर्यावरणीय शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से कोई भी व्यक्ति सीख सकता है कि जलवायु परिवर्तन के लिए कैसे तैयार रहा जाए।

प्रियंका सौरभ

लिव-इन रिलेशनशिप को मान्यता कितनी जायज़?

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: लिव-इन रिलेशनशिप के मुश्किल से 10% मामले ही शादी तक पहुँच पाते हैं। बाक़ी 90% मामलों में रिश्ते टूट ही जाते हैं। ठीक उसी तरह, जिस तरह आजकल के नवयुवक प्रेमी-प्रेमिकाएँ जितनी तेजी से प्रोपोज़ करते हैं उतनी ही तेज़ी से ब्रेकअप और फिर उतनी ही तेज़ी से प्रेमी भी बदल लेते हैं। ऐसे प्रेमी-प्रेमिकाओं को लिव-इन रिलेशनशिप जैसी लुभावनी प्रथा सही लगती है। क्योंकि उन्हें एक दूसरे के साथ बिना शादी के पति-पत्नी जैसा रहने का मौक़ा मिल जाता है और पति-पत्नी जैसे रिश्ते का अर्थ आप अच्छी तरह समझते हैं। इसीलिए रिश्ता टूटने के बाद सबसे ज़्यादा जीवन बर्बाद लड़कियों का होता है। विशेषकर विवाह के समान भरण-पोषण और उत्तराधिकार के अधिकार प्रदान करना। सहवास में जन्मे बच्चों की कानूनी स्थिति को स्पष्ट करना, विशेष रूप से वैधता और उत्तराधिकार अधिकारों के सम्बंध में। रिश्ता टूटने के बाद अक्सर लड़कियाँ आत्महत्या जैसे क़दम उठा लिया करती हैं।

वैश्वीकरण के प्रभाव और पश्चिमी संस्कृति के संपर्क में आने के कारण अब लिव-इन रिलेशनशिप को अधिक स्वीकार्य माना जाने लगा है। यह सहवास के नैतिक परिणामों तथा विवाह और परिवार के पारंपरिक विचारों पर प्रश्न उठाता है। भारतीय युवाओं की जीवन शैली में तेज़ी से बदलाव आ रहा है। इसके लिए ये आधुनिक संस्कृति को अपनाने में कोई भी झिझक महसूस नहीं करते और लिव इन रिलेशनशिप आधुनिक संस्कृति की ही एक शैली है। आजकल के युवा लिव इन रिलेशनशिप को वैवाहिक जीवन से बेहतर मानने लगे हैं। आज की पीढ़ी शादी और लिव इन रिलेशनशिप को एक जैसा ही मानती है। इनका मानना है कि शादी में समाज और क़ानून का हस्तक्षेप होता है किन्तु लिव इन रिलेशनशिप में ऐसा कुछ भी नहीं होता है। बल्कि पूरी आज़ादी होती है। लेकिन शादी और लिव इन रिलेशनशिप में अंतर है। ये प्रथा जितनी आसान लगती है उतनी ही पेचीदा है। जितने इसके फ़ायदे हैं उससे कहीं ज़्यादा नुक़सान हैं। इस तरह के सम्बंध प्रायः पश्चिमी देशों में बहुतायत में देखने मिलते हैं। क्योंकि वहाँ की संस्कृति इस प्रथा को सहज ही स्वीकार करती है। वहाँ की लाइफ़स्टाइल भी कुछ इसी तरह की है। भारत में भी कुछ वर्षों से इस व्यवस्था को सपोर्ट मिला है। जिसके पीछे महानगरों में बसने वाले कुछ लोगों के बदलते सामाजिक विचार, विवाह की समस्या और धर्म से जुड़े मामलों का होना माना जा सकता है। समाज का एक वर्ग इसे भारतीय संस्कृति के लिए सबसे बड़ा ख़तरा मानता है। तो वहीँ दूसरा वर्ग इसे आधुनिक परंपरा में बदलाव के रूप में देखते हुए स्वतन्त्र जीवन जीने के लिए वरदान मानता है। हर चीज़ के अपने-अपने फायदे और नुक़सान होते हैं।

हाल ही में अधिनियमित उत्तराखंड समान नागरिक संहिता (यूसीसी) ने लिव-इन पार्टनरशिप के लिए व्यापक विनियमों की एक श्रृंखला स्थापित की, जिसका लक्ष्य उन्हें विनियमित करना और उनकी कानूनी मान्यता की गारंटी देना है। लेकिन इनसे काफ़ी चर्चा भी हुई है और सरकारी निगरानी तथा गोपनीयता को लेकर चिंताएँ भी पैदा हुई हैं। पिछले 20 वर्षों में, लिव-इन रिलेशनशिप-जिसमें जोड़े बिना शादी किए एक साथ रहते हैं-भारतीय समाज और कानून में अधिक स्वीकार्य हो गए हैं। अतीत में भारतीय समाज पारंपरिक मूल्यों पर आधारित था और प्रतिबद्ध रिश्ते का एकमात्र स्वीकृत रूप विवाह था। लिव-इन पार्टनरशिप को अक्सर कलंकित माना जाता था तथा समाज द्वारा इसे नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता था। हालाँकि, वैश्वीकरण के प्रभाव और पश्चिमी संस्कृति के संपर्क में आने के कारण अब लिव-इन रिलेशनशिप को अधिक स्वीकार्य माना जाने लगा है। जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार (अनुच्छेद एस. ख़ुशबू बनाम) का उपयोग करते हुए, भारतीय अदालतों ने कई फैसलों में लिव-इन रिश्तों को मान्यता दी है। कन्नियाम्मल (2010) के अनुसार, लिव-इन पार्टनरशिप व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्गत आती है। सरमा, इंद्र वि। 3. के. वी. । सरमा (2013) : इसने घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005 (पीडब्ल्यूडीवीए) के तहत विवाह जैसे दिखने वाले लिव-इन रिश्तों को मान्यता दी और उन्हें विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया। भारत के मुख्य न्यायाधीश ने रेखांकित किया है कि साथी चुनने और घनिष्ठ सम्बंध स्थापित करने की स्वतंत्रता संविधान के मुक्त भाषण और अभिव्यक्ति पर अनुच्छेद 19 (सी) के अंतर्गत आती है।

घरेलू हिंसा के विरुद्ध संरक्षण अधिनियम, 2005 (पीडब्ल्यूडीवीए) अपने दायरे में "विवाह की प्रकृति वाले सम्बंधों" को शामिल करके, लिव-इन सम्बंधों में घरेलू हिंसा का सामना करने वाली महिलाओं को संरक्षण प्रदान करता है। डी. वेलुसामी बनाम के सम्बंध में। न्यायालय ने डी. पचैअम्मल (2010) में फ़ैसला सुनाया कि केवल विवाह जैसे रिश्ते ही घरेलू हिंसा कानूनों के तहत कानूनी संरक्षण के लिए योग्य होंगे। सर्वोच्च न्यायालय ने उन मामलों में व्यवस्था दी है जहाँ लिव-इन रिलेशनशिप से जन्मे बच्चों को कानूनी रूप से विवाहित माता-पिता के समान उत्तराधिकार के अधिकार प्राप्त होंगे। उत्तराखंड यूसीसी के तहत लिव-इन पार्टनरशिप का पंजीकरण होना आवश्यक है। यह उत्तराखंड के निवासियों और भारत के बाहर रहने वाले लोगों दोनों पर लागू है। जो जोड़े एक साथ रहने का निर्णय लेते हैं, उन्हें अपने रिश्ते को यूसीसी के तहत शुरू और अंत में पंजीकृत कराना होगा। यदि वे औपचारिक रूप से अपने रिश्ते को स्थापित करना चाहते हैं, तो विवाह के लिए युगल की पात्रता की पुष्टि करने वाला धार्मिक नेता से प्राप्त प्रमाण पत्र, आधार से जुड़ा ओटीपी, तथा पंजीकरण शुल्क, सहायक दस्तावेजों के साथ आ सकते हैं। यूसीसी अधिनियम के तहत 74 प्रकार के सम्बंधों पर प्रतिबन्ध है, जिनमें से 37 पुरुषों के लिए तथा 37 महिलाओं के लिए हैं। धार्मिक नेताओं या सामुदायिक नेताओं को उन जोड़ों को अपनी स्वीकृति देनी चाहिए जो निषिद्ध सम्बंधों की इन श्रेणियों में आते हैं। यदि रजिस्ट्रार यह निर्धारित करते हैं कि सम्बंध सार्वजनिक नैतिकता या रीति-रिवाजों का उल्लंघन करता है तो वे पंजीकरण से इनकार कर सकते हैं।

प्राइवेसी कंसर्न (न्यायमूर्ति के.एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ) के अनुसार, संविधान के अनुच्छेद 21 द्वारा गारंटीकृत गोपनीयता के अधिकार का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा है, साथ ही लोगों के निजी जीवन पर अधिक आधिकारिक निगरानी भी की जा रही है। नये नियमों से जातियों और धर्मों के बीच सम्बंधों में संभावित बाधाएँ उत्पन्न होने से चिंताएँ उत्पन्न हो गई हैं। आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 125 और पीडब्ल्यूडीवीए, 2005, वर्तमान में लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाली महिलाओं को भरण-पोषण का अनुरोध करने की अनुमति देते हैं; हालाँकि, ये अधिकार अयोग्य नहीं हैं। कानूनी विवाद उन लोगों से उत्पन्न हो सकते हैं जो लंबे समय तक ऐसे रिश्तों के प्रति प्रतिबद्ध हुए बिना उनमें प्रवेश करते हैं, लेकिन बाद में अपने कानूनी अधिकारों का दावा करते हैं। विशेषकर रूढ़िवादी समुदायों में, यह सहवास के नैतिक परिणामों तथा विवाह और परिवार के पारंपरिक विचारों पर प्रश्न उठाता है। यद्यपि उत्तराखंड यूसीसी लिव-इन पार्टनरशिप को कानूनी संरक्षण और मान्यता प्रदान करना चाहता है, लेकिन यह गोपनीयता और सरकारी हस्तक्षेप के महत्त्वपूर्ण मुद्दे भी उठाता है। नए नियमों को इस तरह लागू करने के लिए कि सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा मिले और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा हो, रिश्तों को नियंत्रित करने और व्यक्तिगत स्वायत्तता को बनाए रखने के बीच संतुलन बनाना आवश्यक होगा। यदि समान नागरिक संहिता व्यक्तिगत कानूनों का स्थान ले ले, तो सहवास में महिलाओं की समानता की गारंटी पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

लिव-इन रिलेशनशिप के मुश्किल से 10% मामले ही शादी तक पहुँच पाते हैं। बाक़ी 90% मामलों में रिश्ते टूट ही जाते हैं। ठीक उसी तरह, जिस तरह आजकल के नवयुवक प्रेमी-प्रेमिकाएँ जितनी तेजी से प्रोपोज़ करते हैं उतनी ही तेज़ी से ब्रेकअप और फिर उतनी ही तेज़ी से प्रेमी भी बदल लेते हैं। ऐसे प्रेमी-प्रेमिकाओं को लिव-इन रिलेशनशिप जैसी लुभावनी प्रथा सही लगती है। क्योंकि उन्हें एक दूसरे के साथ बिना शादी के पति-पत्नी जैसा रहने का मौक़ा मिल जाता है और पति-पत्नी जैसे रिश्ते का अर्थ आप अच्छी तरह समझते हैं। इसीलिए रिश्ता टूटने के बाद सबसे ज़्यादा जीवन बर्बाद लड़कियों का होता है। विशेषकर विवाह के समान भरण-पोषण और उत्तराधिकार के अधिकार प्रदान करना। सहवास में जन्मे बच्चों की कानूनी स्थिति को स्पष्ट करना, विशेष रूप से वैधता और उत्तराधिकार अधिकारों के सम्बंध में। रिश्ता टूटने के बाद अक्सर लड़कियाँ आत्महत्या जैसे क़दम उठा लिया करती हैं।

डॉ सत्यवान सौरभ

प्रगतिशील सोच का पर्याय- विज्ञान दिवस

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: राष्ट्रीय विज्ञान दिवस देशभर में 28 फरवरी को मनाया जाता है। यह भारतीय भौतिकशास्त्री सर चंद्रशेखर वेंकट रमन द्वारा "रमन प्रभाव" की खोज की याद को स्थाई रखने के लिए मनाया जाता है।भौतिक शास्त्री सी.वी.रमन को भारत का महान अनुसंधानकर्ता कहा जाता है। उन्हें विश्व का प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार मिला। भारत रत्न दिया गया और 'सर' की उपाधि भी दी गई। पूरी दुनिया उन्हें सम्मान के साथ सर सी.वी. रमन कहती है। यह सब सम्मान रमन इफेक्ट की खोज के कारण मिला। आइये जानते है कि रमन इफेक्ट में ऐसा क्या है जिससे दुनिया को क्या फायदा हुआ।

विश्व प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री सर सी वी रमन ने खोज करके दुनिया को पहली बार बताया कि लाइट यानी प्रकाश हमेशा सीधी लाइन में नहीं चलता। जब प्रकाश की किरण किसी भी पारदर्शी माध्यम (पानी, कांच या कोई भी ठोस अथवा द्रव्य अथवा गैस) से गुजरती हैं तब उनके स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। प्रोफेसर रमन ने बताया कि प्रकाश की किरण जब माध्यम से टकराती है तो माध्यम में मौजूद कण प्रकाश की किरणों के संगठन को तोड़ देते हैं। ठीक वैसे ही जैसे कैरम बोर्ड में स्ट्राइकर, गोटियों को बिखेर देता है।

संक्षेप में कहे तो यदि रमन इफेक्ट का पता नहीं चलता तो अपन मंगल पर नहीं पहुंच पाते और शायद सेटेलाइट भी लॉन्च नहीं कर पाते। ना तो टीवी होते और ना ही मोबाइल फोन। अब पढ़िए काम की बात- प्रोफेसर रमन की खोज के बाद ही दो हजार रासायनिक यौगिकों की आंतरिक संरचना का निर्धारण किया जा सका और रमन इफेक्ट के कारण क्रिस्टल के इंटरनल स्ट्रक्चर का पता लगा। रमन इफेक्ट के कारण ही दुनिया के वैज्ञानिकों को पता चल इफेक्ट के कारण दुनिया में कितनी खोज हुई तरंग लम्बाइयों का यह परिवर्तन उनकी ऊर्जा में परिवर्तन के कारण होता है। ऊर्जा में बढ़ोतरी हो जाने से तरंग की लंबाई कम हो जाती है और ऊर्जा में कमी आने से तरंग की लम्बाई बढ़ जाती है। जब हम लाल रंग के प्रकाश से बैंगनी की ओर और उससे भी आगे पराबैंगनी की ओर बढ़ते हैं, तो ऊर्जा बढ़ती है और तरंग लम्बाई छोटी होती जाती है। यह ऊर्जा सदैव निश्चित मात्रा में ही घटती-बढ़ती है तथा इसके कारण हुआ तरंग-लम्बाई का परिवर्तन सदैव निश्चित मात्रा में होता है।

अत: हम कह सकते हैं कि प्रकाश ऊर्जा-कणिकाओं का बना हुआ है। प्रकाश दो तरह के लक्षण दिखाता है। कुछ लक्षणों से वह तरंगों से बना जान पड़ता है और कुछ से ऊर्जा कणिकाओं से।रमन प्रभाव' ने उसकी ऊर्जा के भीतर परमाणुओं की योजना समझने में भी सहायता की है, जिनमें से एक रंगी प्रकाश को गुज़ार कर रमण स्पेक्ट्रम प्राप्त किया जाता है। हर एक रासायनिक द्रव का रमण स्पेक्ट्रम उसका विशिष्ट होता है। किसी दूसरे पदार्थ का वैसा नहीं होता। हम किसी पदार्थ के रमण स्पेक्ट्रम पदार्थों को देख कर उसे पहचान सकते हैं। इस तरह रमण स्पेक्ट्रम पदार्थों को पहचानने और उनकी अन्तरंग परमाणु योजना का ज्ञान प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन भी है। यह

प्रभाव विज्ञान में काफी महत्वपूर्ण खोज है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के दिन देश के विभिन्न इलाकों में विज्ञान के गतिविधियों कों बढ़ावा देने वाले कार्यकमो का आयोजन किया जाता है। साथ ही, इस दिवस का लक्ष्य जनता में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना है।देश में पहला राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी, 1987 को मनाया गया था। भारत सरकार ने 1928 में सर सी. वी. रमन द्वारा 'रमन प्रभाव' की खोज की वर्षगांठ को मनाने के लिए 1986 में राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (NCSTC) की सिफारिश पर इस दिन को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में घोषित किया था।

बदलते विश्व में जहाँ वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति समाजों को नया आकार दे रही हैं, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस कई कारणों से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है- हमारे वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करता है। रमन प्रभाव की खोज का दिवस मनाने वाला एक राष्ट्रीय उत्सव हमारे राष्ट्र के पूरे वैज्ञानिक समुदाय को सम्मानित करने का दिन है। यह उन्हें अपने वैज्ञानिक प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करता है। विज्ञान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देता है।राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित आउटरीच कार्यक्रम विभिन्न वैज्ञानिक अवधारणाओं और हाल की प्रगति की सार्वजनिक समझ को व्यापक बनाने में मदद करते हैं। वैज्ञानिक स्वभाव को बढ़ावा देता है।इस दिन आयोजित विभिन्न व्याख्यानों, वाद-विवादों, प्रश्नोत्तरी और प्रदर्शनियों के माध्यम से लोगों को नवीनतम वैज्ञानिक प्रगति के बारे में शिक्षित किया जाता है और उनमें वैज्ञानिक स्वभाव और तार्किक सोच को विकसित किया जाता है। इस प्रकार, यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51A में निहित एक मौलिक कर्तव्य को लागू करने में मदद करता है। विज्ञान दिवस युवा मन में जिज्ञासा जागृत करता है।विभिन्न प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और विज्ञान मेलों जैसी आकर्षक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को विज्ञान से मजेदार और इंटरैक्टिव तरीके से परिचित कराया जाता है, जिससे उनके मन में इसके लिए जुनून पैदा होता है।

भारतीय विज्ञान में प्रगति को उजागर करता है।विज्ञान दिवस पूरे भारत में विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में नवीनतम उपलब्धियों और पहलों का प्रदर्शन करने के रूप में कार्य करता है। यह राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देता है और भविष्य की पीढ़ियों को वैज्ञानिक करियर बनाने के लिए प्रेरित करता है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देता है।विज्ञान को राष्ट्रीय स्तर पर मनाकर, भारत वैज्ञानिक प्रगति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करता है और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदायों के साथ सहयोग के लिए द्वार खोलता है। वैज्ञानिक आधार को सशक्त करता है।भविष्य की पीढ़ियों को वैज्ञानिक प्रगति में योगदान करने और विज्ञान के माध्यम से वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रेरित करके, यह हमारे राष्ट्र के वैज्ञानिक आधार को मजबूत करता है।

रमन प्रभाव की ऐतिहासिक वैज्ञानिक खोज के स्मरणोत्सव से कहीं अधिक, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का महत्त्व भारत की वैश्विक वैज्ञानिक महाशक्ति बनने की चल रही यात्रा को दर्शाता है। अतीत का सम्मान करके, वर्तमान का उत्सव मनाकर और भविष्य की कल्पना करके, यह भारत की वैज्ञानिक प्रगति को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक ऐसा दिन है जो एक बेहतर कल के लिए खोज एवं नवाचार करने की राष्ट्र की सामूहिक आकाँक्षा को पुष्ट करता है, जहाँ सभी के लिए अधिक न्यायसंगत, टिकाऊ और समृद्ध दुनिया बनाने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है।

हरीश सुवासिया
आर.ई.एस.

हजारीबाग और रामगढ़ की धरती बनी साम्प्रदायिक हिंसा का प्रयोगशाला- विजय शंकर नायक

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (रांची): भाजपा/आरएसएस की साम्प्रदायिक नीतियों के कारण झारखंड में बढ़ रही है हिंसा उपरोक्त आरोप आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष सह पूर्व विधायक प्रत्याशी विजय शंकर नायक ने हजारीबाग एंव रामगढ़ मे साम्प्रदायिक हिंसक की घटना होने पर आज अपनी प्रतिक्रिया मे उक्त बाते कही। इन्होने आगे कहा कि सत्ता से बेदखल होने के बाद भाजपा और आरएसएस नागपुर के इशारे पर वोटो का साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीतिक सोच का ही हजारीबाग एंव रामगढ़ नतीजा है।

श्री नायक ने आगे कहा कि भाजपा/आरएसएस एवं साम्प्रदायिक विचारधारा के लोग इस घटना के लिए पूर्ण रूप से जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि यह हिंसा सिर्फ एक दिन की घटना नहीं है, बल्कि सत्ता से बाहर हो जाने पर भाजपा के लोग वोटों की ध्रुवीकरण कि राजनीतिक नीतियों और सोच का परिणाम है, जो धीरे -धीरे झारखंडी समाज एंव झारखंड की सहिया सांस्कृति को कमजोर कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह वोटों की ध्रुवीकरण की राजनीति जिसकी नींव आरएसएस/हिन्दु महासभा ने स्वतंत्रता से पहले ही रख दी थी, और अब झारखंड को इस "नीति का प्रयोगशाला" बनाया जा रहा है।

श्री नायक ने आरोप लगाया कि भाजपा/आरएसएस की साम्प्रदायिक नीति के कारण ही आज विभिन्न जिलों में हिंसक घटनाऐं घट रही है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि भाजपा के द्वारा हिन्दुत्व के नाम पर वोट की राजनीति करना, अल्पसंख्याको को मोबलिंचिंग करने वालो को राजनीतिक संरक्षण देकर हजारीबाग के पूर्व सांसद दवारा माला पहनाना, आदिवासीयों को 'जबरदस्ती हिन्दु बनाना, सरना कोड नही देना, साम्प्रदायिक विचार धारा वालो संगठनों को विस्तार करना, बड़े पैमाने पर आदिवासीयों को हिन्दु बनाकर धर्मांतरण को बढ़ावा देना इसी नीति का ही हिस्सा हैं।

श्री नायक ने 2022 में रांची में हुए दंगे का उल्लेख करते हुए कहा कि राजधानी में दिनदहाड़े उपद्रव हुए था, जिसमे की कई अल्पसंख्यक युवाओं को पुलिस के द्वारा पैर मे गोली न मारकर डायरेक्टर छाती पर गोली मारी गई थी जिससे कई अल्पसंख्यक युवाओ की असमय मौत हुई थी। जिसमे आज तक यह स्पष्ट नही हो सका कि वे पुलिस की गोली से मरे या फिर किसी अन्य लोगो के द्वारा गोली चलाने से उनकी हत्या हुई। आज तक यह स्पष्ट नहीं हुआ कि उसके पीछे का मास्टरमाइंड कौन था जिसने डायरेक्ट छाती पर गोली चलवाई थी। आज भी वह रहस्य ही बनकर रह गया और मुआवजा तक नही मिला ना ही जांच का कोई परिणाम ही निकल सका।

श्री नायक ने आगे आरोप लगाया कि भाजपा/आरएसएस की साम्प्रदायिक नीतियों ने झारखंड में उग्र साम्प्रदायिक विचारधाराओं को पैर पसारने का अवसर दे रहा है। उन्होंने राज्य सरकार को आगाह किया कि यदि झारखंड सरकार जल्द ही भाजपा/आरएसएस की साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति की नीतियों पर लगाम नहीं लगाती है तो राज्य पूरी तरह से इन उपद्रवियों की चपेट में आ जाएगा। इन्होने साफ शब्दो मे कहा कि रामगढ़ और हजारीबाग हिंसक घटनाओं के दोषीयो चाहे कोई भी धर्म से हो उन पर सख्त से सख्त कार्रवाई किए जाए ताकि ऐसी घटनाओ की पुनरावृत्ति फिर से न हो सके।

लोजपा रामबिलास के कीर्तनिया पंचायत अध्यक्ष बने ललन पासवान

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (ऋषिकान्त मिश्र) पीरपैंती-: प्रखंड के कीर्तनिया में लोजपा रामविलास के प्रखंड अध्यक्ष सौरभ कुमार साह के नेतृत्व मे समारोह आयोजित कर पंचायत अध्यक्ष पद पर ललन पासवान को नियुक्त किया गया।

वहीं पंचायत अध्यक्ष ललन पासवान ने कहा कि इस पद की गरिमा को ध्यान में रखते हुए मेरे द्वारा जनकल्याण को लेकर हर संभव प्रयास किया जाएगा। साथ ही पार्टी को एक मुकाम तक पहुंचाने का हर संभव प्रयास करूँगा।

प्रखंड अध्यक्ष सौरभ साह ने पार्टी के उद्देश्य से लोगों को अवगत करवाया।

मौके पर रंजीत गुप्ता, बमबम गुप्ता, भोजल पासवान, सुरेश पासवान, धुटर पासवान, बिट्टू पोद्दार, निरंजन पासवान, अमित पासवान, बिट्टू गुप्ता, अमित गुप्ता, पूरन तांती, बरबीर राय, विनोद पंडित, विकास गुप्ता, भोगन सोरन सहित दर्जनों ग्रामीण उपस्थित रहे।

बीडीओ ने की मध्य विद्यालय नारायणपुर का औचक निरीक्षण

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (ऋषिकान्त मिश्र) पीरपैंती-: प्रखंड के मध्य विद्यालय नारायणपुर में प्रखण्ड विकास पदाधिकारी अभिमन्यु कुमार ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में छात्र-छात्राओं की संख्या काफी कम पाई गई और कई तरह की अनियमितताएँ भी देखने को मिलीं। वहीं बीडीओ ने बताया कि इसके लिए विद्यालय के प्रधानाध्यापक से स्पष्टीकरण मांगा गया है।

शंकर जी का प्रसाद समझकर गांजा, भांग, धतूरा खाना अज्ञानता है- बाबा उमाकान्त जी महाराज

खान-पान और चरित्र ख़राब होने के कारण ही मानवता खत्म होती जा रही है

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (उज्जैन): बाबा उमाकान्त जी महाराज ने बताया कि पौराणिक कथाओं में मिलता है कि जब युग बदला मलिनता आ गई तो लोग शंकर जी को नहीं देख पा रहे थे, तब श्रद्धा भाव बनाए रखने के लिए आज (शिवरात्रि) के दिन शिव लिंग प्रकट हुआ था। लोग शिवलिंग पर भांग, धतूरा इत्यादि चढ़ाते हैं, अब क्यों चढ़ाते हैं और उससे क्या फायदा होता है, ये तो वो जाने, लेकिन हमको तो यह लगता है कि उससे कोई फायदा नहीं होता है। ये तो उस समय की बात है जब समुद्र मंथन हुआ था, उसमें देवता और दैत्य दोनों मौजूद थे। जो अच्छी चीज़ें थीं उनका बँटवारा तो उन लोगों ने कर लिया, लेकिन अमृत का कलश लेकर धन्वंतरि आख़िर में जब निकले तब दैत्य चाहने लगे कि हम अमृत पी जाएँ और अमर हो जाएँ। देवता ऐसा नहीं चाहते थे, क्योंकि राक्षस अधिक शक्तिशाली पड़ते और देवता कमज़ोर पड़ जाते, तो धर्म खत्म हो जाता, श्रद्धा लोगों की खत्म हो जाती और व्यवस्था बिगड़ जाती। दैत्य अथवा राक्षस उनको कहते हैं, जिनका खान पान सही नहीं रहता, बुद्धि एवं चाल-चलन ख़राब हो जाता है। जैसे इस समय पर ज़्यादा राक्षसी प्रवृत्ति बढ़ रही है। खान-पान और चरित्र ख़राब होने के कारण ही मानवता

खत्म होती जा रही है। तो देवताओं ने सोचा कि यह (दैत्य) हमारे ऊपर हमला कर देंगे और तमाम कथाओं में मिलता है कि ऐसा होता भी था।

धतूरा और भांग का पौराणिक इतिहास

समुद्र मंथन में विष (हलाहल) भी निकला था। उसको शंकर जी ने पिया था और ऊपर (गले में) ही रखा था लेकिन वह ऊपर असर करने लग गया था। तब देवताओं ने (धन्वंतरि इत्यादि) धतूरा और भांग को ऊपर से सिर पर रखा। दोनों ज़हरीले होते हैं और दोनों में नशा होता है। कोई ज़हरीली चीज़ आदमी खा लेता है तो हल्का नशा होता है और तेज जहर खा लेता है तो बेहोश/खत्म हो जाता है। तो उस समय की बात है। अब लोगों ने वही प्रणाली बना लिया, फिर उसी को लोग प्रसाद रूप में खाने लग गए। फिर भांग गांजा धतूरा को लोगों ने शंकर जी का प्रसाद मान कर, बूटी समझ कर पीने-खाने लग गए। इसको अज्ञानता कहा जाएगा, उनको ज्ञान नहीं हुआ, उनको कोई ज्ञान कराने वाला नहीं मिला। अब देखो एक आदमी भांग खाने लग गया, तो सब भांग खाने लग जाते हैं। कहते हैं हम शंकर जी के भक्त हैं, गांजा पियेंगे तभी भक्त कहलायेंगे, धतूरा खाएँगे तभी भक्त कहलायेंगे। तो यह अज्ञानता है, अज्ञानता में आप मत फंसना।

बीमारी व तकलीफों में आराम देने वाला नाम "जयगुरुदेव"

किसी भी बीमारी, दुःख, तकलीफ, मानसिक टेंशन में शाकाहारी, सदाचारी, नशामुक्त रहते हुए जयगुरुदेव जयगुरुदेव जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव की ध्वनि रोज सुबह-शाम बोलिए व परिवार वालों को बोलवाइए और फायदा देखिए।

महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर नृत्य प्रतियोगिता

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (निरसा): महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर नृत्य प्रतियोगिता एग्यारकुण्ड दक्षिण पंचायत शिव मंदिर नीमडंगाल में किया गया। जिसमें प्रथम पुरस्कार मौसमी बाउरी, द्वित्य पुरस्कार बंदना मोदी, तृतीय पुरस्कार इंदु मोदी, चतुर्थी पुरस्कार रिया कुमारी, पंचम पुरस्कार राशी कुमारी को प्राप्त हुआ.

कार्यक्रम का उद्घाटन एगारकुंड दक्षिण पंचायत के मुखिया अजय कुमार राम के हाथों कराया गया. इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कमेटी के अध्यक्ष मनोज राजवंशी, एवं सभी सदस्य गण मुन्ना बउरी, उदय साव, बिक्कि पासवान, किसन बउरी, कपिल रबिदास, टिंकु प्रसाद, तुफान बउरी, विशाल बाउरी, अर्जुन बाउरी, जैकी राजवंशी, राजा बउरी, सुरेश रबिदास, जोगेंदर रबिदास, सागर मोदी, मानिक मोदी, करण मोदी, वीवेक बाउरी आदि ने काफी सहयोग किया।

मानवीय उदाहरण- कलाकारों द्वारा अपनी पेंटिंग बेचकर अर्जित धन से मूक-बधिरों की सहायता

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (कोलकाता): कलाकारों द्वारा अपनी पेंटिंग बेचकर अर्जित धन से मूक-बधिरों की सहायता करने की पहल एक मानवीय उदाहरण है। हाल ही में, प्रसिद्ध कलाकार सिमसन दास की पहल पर "अबासाबारी फेथ कल्चरल सोसाइटी" के बैनर तले कोलकाता के आईसीसीआर में तीन दिवसीय खूबसूरत कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 45 प्रतिष्ठित कलाकारों ने भाग लिया और प्रत्येक कलाकार को "शिल्पी सम्मान 2025" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन बतौर विशिष्ट अतिथि अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कलाकार गौर मोहन पहाड़ी, भारतीय कला महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य हरिमोहन बागली, प्रतिष्ठित कलाकार तपन चटर्जी, कलाकार अनूप कुमार कर, भारतीय संग्रहालय मॉडलिंग इकाई के प्रमुख कौशिक पाल, प्रतिष्ठित कलाकार कश्यप रॉय, अभिनेता सौरभ घोष, अभिनेता विश्वनाथ बोस सहित कई अन्य प्रमुख कलाकार एवं सांस्कृतिक हस्तियों ने किया। सिमसन दास, निवेदिता पोले, प्रीतम मैती, कश्यप रॉय, नंदिता चक्रवर्ती, ऐन्द्रिला दत्ता, मंदिरा गांगुली और डॉ. रंजन बसु सहित कलाकारों की कलाकृतियां विशेष रूप से दर्शकों को आकर्षित करती हैं। प्रदर्शनी के अंतिम दिन मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात शिक्षाविद् एवं समाजसेवी डॉ. चंद्रचूड़ गोस्वामी उपस्थित थे। प्रदर्शनी में उनकी बचपन की शिक्षिका, प्रसिद्ध कलाकार निवेदिता पोला की पेंटिंग्स भी प्रदर्शित की गई हैं। प्रदर्शनी के बाद कलाकार सिमसन दास, निवेदिता पोले और कई अन्य प्रमुख कलाकारों ने निर्णय लिया कि यदि उनकी पेंटिंग बिक गईं तो वे आय का एक बड़ा हिस्सा समाज के मूक-बधिर बच्चों की मदद के लिए दान करेंगे और वे जल्द ही इसी उद्देश्य से एक और प्रदर्शनी का आयोजन करेंगे। कलाकारों की पहल की सराहना करते हुए डॉ. चंद्रचूड़ गोस्वामी ने "स्वास्तिक समाचार" और "वेब जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया" की ओर से निःशुल्क डिजिटल एल्बम बनाने का वादा किया। इस डिजिटल एल्बम के माध्यम से दुनिया भर के कला प्रेमी कलाकारों की पेंटिंग्स और कलाकृतियों को ऑनलाइन देख और खरीद सकेंगे। इस धनराशि का एक हिस्सा "स्वस्तिक न्यूज़" और "अबसबारी फेथ कल्चरल सोसाइटी" के माध्यम से मूक-बधिर बच्चों के कल्याण के लिए सीधे तौर पर इस्तेमाल किया जाएगा। शिल्पीमहल इस अभिनव पहल में सहयोग के लिए चंद्रचूड़ बाबू और उनके संगठन को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता है।

प्रधानमंत्री आवास योजना को लेकर हुई समीक्षात्मक बैठक

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (ऋषिकान्त मिश्र) पीरपैंती-: प्रखण्ड कार्यालय स्थित ट्रायसेम भवन सभागार में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण की समीक्षात्मक बैठक बीडीओ अभिमन्यु कुमार अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इसमें सभी सर्वेक्षक,ग्रामीण आवास सहायक, पंचायत रोजगार सेवक एवं पंचायत सचिव सहित सभी विकास मित्र मौजूद थे। वहीं बीडीओ ने सभी सर्वेक्षकों को त्वरित गति से योग्य लाभुकों का नाम जोड़ने व अनुसूचित जाति एवं जनजाति समुदाय के लाभुकों पर विशेष ध्यान देंने का निर्देश दिया। साथ हीं अनुसूचित जाति/जनजाति बाहुल्य पंचायत राजगांव, राजगांव आराजी, सलेमपुर, हरिनकोल आदि के सहायक द्वारा कम संख्या में एससी/एसटी का नाम जुड़ने पर नाराजगी जताई गई। जॉब कार्ड बनने में देरी करने पर मनरेगा ऑपरेटर को चेतावनी दी गई कि जनकल्याणकारी कार्यों में शिथिलता न बरते। सभी को निदेशित किया गया कि किसी भी परिस्थिति में अयोग्य लाभुक का नाम न जोड़ें और योग्य लाभुक का नाम न छोड़ें। अगर निरीक्षण के दौरान कहीं भी बिचौलिया की शिकायत मिलती है तो संबंधित सर्वेक्षक पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में प्रखण्ड कार्यक्रम पदाधिकारी देवेश कुमार गुप्ता मौजूद थे।

नालन्दा अभियंत्रण महाविद्यालय, चण्डी में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (पटना): नालन्दा अभियंत्रण महाविद्यालय, चण्डी (नालन्दा) में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। हर वर्ष 28 फरवरी को महान वैज्ञानिक डॉ. सी.वी. रमन की उपलब्धियों के सम्मान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है जिन्होंने 1928 में प्रसिद्ध रमन प्रभाव की खोज की थी। उनकी इस खोज के लिए उन्हें 1930 में भौतिकी के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० (डॉ.) गोपाल नंदन ने विषय वस्तु पर विस्तार से चर्चा करते हुए मानव जीवन में विज्ञान का महत्व एवं उसकी उपयोगिता को रेखांकित किया।

उन्होंने बिहार काउंसिल ऑन साइंस एंड टेक्नोलॉजी (विज्ञान, प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग, बिहार सरकार) के द्वारा आयोजित परीक्षा सर सीवी रमन टैलेंट सर्च टेस्ट इन साइंस के माध्यम से चयनित होकर आए छात्र - छात्राओं को शुभकामनाएं दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि सफलता पाने के लिए लगनशील होना आवश्यक है। आप सभी और मेहनत करें और अपने लक्ष्य को हासिल करें।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भौतिकी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ० धीरेन्द्र कुमार ने डॉ. सीवी रमन के जीवन एवं उनके उपलब्धियों के उपर प्रकाश डाला और कहा कि हम सभी इससे प्रेरणा ले सकते हैं और विज्ञान के क्षेत्र अपनी पहचान बना सकते हैं। उन्होंने इस वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम "सतत विकास के लिए विज्ञान और नवाचार" पर चर्चा करते हुए कहा कि इसका उद्देश्य विज्ञान और तकनीक के उपयोग से सामाजिक और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना है।

इस कार्यक्रम की कॉर्डिनेटर डॉ० सुषमा कुमारी ने सभी के मेहनत को सराहते हुए बेहतर भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर डॉ. धनंजय सिंह, मो० शाहिर मल्लिक, डॉ. ब्रजेश कुमार, श्वेता कुमारी, डॉ. अजय कुमार, कुमार सचिन यादव उपस्थित थे। मंच संचालन सीएसइ के प्रथम सेमेस्टर छात्रा अदिति झा, महिमा कुमारी एवं रूची रानी के द्वारा किया गया और धन्यवाद ज्ञापन अभिनव के द्वारा दिया गया।

न्याय मित्र चयन को लेकर सरपंच और पंचों के साथ बीडीओ ने की बैठक

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (ऋषिकान्त मिश्र) पीरपैंती-: प्रखंड कार्यालय स्थित ट्रायसेम भवन सभागार में प्रखंड विकास पदाधिकारी अभिमन्यु कुमार के अध्यक्षता में न्याय मित्र चयन के संबंध में हरिनकोल, रिफातपुर और ओलापुर के सरपंच,पंच और कचहरी सचिव के साथ बैठक आयोजित की गई।

बैठक में बताया गया कि तीनों पंचायतों से बड़ी संख्या में आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिनकी जांच के बाद 10 मार्च तक वेबसाइट पर अपलोड किया जाएगा। इसके अलावा, 15 मार्च से 31 मार्च के मध्य दावा आपत्ति आमंत्रित किए जाएंगे।

उसके बाद चयन प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाएगा। इस दौरान सरपंच संघ अध्यक्ष वरुण गोस्वामी सहित अन्य पंचायत के सरपंच एवं पंच उपस्थित थे।

क्यों परेशान हैं वे

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: प्रायः हमारे देखने में आता है कि सुख के सब साधन होते हुए भी कभी खुश वे नहीं दिखते। क्योंकि अनगिनत ख्वाहिशों की नाव पर वे सभी सवार हैं। फिर भी तथाकथित सुखी रहने के साधन जुटाते रहते हैं।

ताकि बिना किए पूरी एक भी ख्वाहिश अधूरी रह न जाए। ख्वाहिशों को पाल कर प्रसन्नता का तो उन्होंने द्वार ही बंद कर रखा है। उन्हें खुशी मिले तो मिले कैसे। सुख और दुःख धूप-छाया की तरह सदा इंसान के साथ रहते हैं। लंबी जिन्दगी में खट्टे-मीठे पदार्थों के समान दोनों का स्वाद चखना होता है। सुख-दुःख के सह-अस्तित्व को आज तक कोई मिटा नहीं सका है।

कोई स्थिति में सुख से प्यार और दुःख से घृणा की मनोवृत्ति ही अनेक समस्याओं का कारण बनती है और इसी से जीवन उलझनभरा प्रतीत होता है। इन दोनों स्थितियों के बीच संतुलन स्थापित करने की, सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की, जरूरत है। एक दुखी आदमी दूसरे दुखी आदमी की तलाश में रहता है, उसके बाद ही वह खुश होता है। उसका यही संकीर्ण दृष्टिकोण इंसान को वास्तविक सुख तक नहीं पहुंचने देता हैं। अतः जबकि हमें अपने अनंत शक्तिमय और आनन्दमय स्वरूप को पहचानना चाहिए तथा आत्मविश्वास और उल्लास की ज्योति प्रज्ज्वलित करनी चाहिए। इसी से वास्तविक सुख का साक्षात्कार संभव है। ख्वाहिशें तो सदैव और-और को चाहती हैं जबकि खुशी को PLEASE, NO MORE जो मिल गया वही काफी है। तभी तो कहा हैं कि जब तक सही दृष्टिकोण नहीं होगा हमारी वहीं की वहीं समस्या उलझी हुई रहेगी।

प्रदीप छाजेड़
बोरावड़

तुमने जो लिखे थे ख़त मुझको

लम्हे तो अक्सर गुजर ही जाते हैं।
सालों में तब्दील हो ही जाते हैं।
माझी का तसव्वुर भी अजीब है।
पल में आंखों को भिगो जाते हैं।
तुमने जो लिखे थे ख़त मुझको।
तहरीर से तेरी वादे महक जाते हैं।
हां तुम्हारे हुक्म का बादशाह था मैं।
लम्स की खुशबू से पिघल जाते थे।
आज ज़ख्मी है "मुश्ताक" तेरा वजूद।
चाहने वाले अक्सर ही बिछड़ जाते हैं।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज़ हरदा मध्य प्रदेश
कोलफील्ड मिरर

यह हरकत तुम्हारी

यह हरकत तुम्हारी, आग तन में लगाये।
यह शरारत तुम्हारी, प्यास मन की जगाये।।
करो मत तुम शरारत ऐसी।
अच्छी नहीं यह आदत ऐसी।।
यह हरकत तुम्हारी---।।

तू कली है, मैं हूँ भंवरा, तू मधु है, मैं हूँ प्यासा।
बहको नहीं तुम इतना, तोड़ो नहीं तुम मेरी आशा।।
यह चंचलता तुम्हारी, हाय मेरी दिल से बुलाये।
यह हरकत तुम्हारी---।।

चूमने दो इन लबों को, और हटाओ तुम यह आँचल।
प्यास मन की जो बुझेगी, हुस्न तेरा भी है कुछ पागल।।
ये काली जुल्फें तुम्हारी, आशियाना दिल का सजाये।
यह हरकत तुम्हारी---।।

कुछ नहीं होश हमको मस्ती में, फूल यहाँ जो खिल रहे हैं।
दिल को मजा बहुत आ रहा है, दो बदन जो मिल रहे हैं।।
यह नशीले नयन तुम्हारे, नशा दीवानगी का बढ़ाये।
यह हरकत तुम्हारी---।।

शिक्षक एवं साहित्यकार
गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद
बारां (राजस्थान)
कोलफील्ड मिरर

जीवन पथ

तुम अपने पथ को
सुपथ करते जाओ
जीवन में जय पराजय
तो चली रहती हैं।

तुम स्वयं के लिए
मार्ग सुगम बनाते जाओ
जीवन में कठिन
डगर तो आते रहते हैं।

तुम हार कर भी
ज़रा जीतना सीखो
लोग दुनिया जीत कर भी
स्वयं से हार जाते हैं।

तुम जीवन रथ पर
चढ़कर दौड़ना सीखो
लोग तो पथ पर कांटे
कहीं ना कहीं बिछाते रहेगे।

डॉ.राजीव डोगरा
कांगड़ा हिमाचल प्रदेश
कोलफील्ड मिरर

आम बजट पर हमारी राय

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: इस बार वित्त मंत्री ने एक फरवरी को जो बजट पेश किया है उसे विकसित भारत की संकल्पना साकार करने की दिशा में एक सार्थक पहल संज्ञा दी जा सकती हैं कारण वित्त मंत्री ने आर्थिक सुस्ती को भांपते हुए उपभोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। भू राजनैतिक अनिश्चितताएं भी सरकार के संज्ञान में है ऐसी परिस्थितियों में वित्त मंत्री ने वृहद आर्थिक स्थायित्व निवेश और उपयोग को प्रोत्साहन देने का असंभव सा काम संभव किया है कारण राजकोषीय अनुशासन के मोर्चे पर सरकार वित्तीय घाटे को नियंत्रित रखने में सफल रही हे बजट में कुछ अपूर्णताऐ भी है कुछ राज्यों की अपेक्षाएं अपेक्षित रूप से पूरी नहीं हो पाई है लेकिन वे साझेदारी के जरिए तरक्की की राह बना सकते हैं वही, जब वृद्धि पर दबाव दिखता है तो ऐसी स्थिति से निपटने के लिए राजकोषीय अनुशासन के बजाय खर्च बढ़ाने को प्राथमिकता देने का नुस्खा सुझाया जाता है हालांकि ऐसे तमाम उहापोह के बीच सरकार सभी मोर्चों पर संतुलन साधन में सफल रही है।

एमएम राजावत "राज"
न्यू रोड, शाजापुर

लक्ष्मी का वरदान हैं बेटियां, घर की शान है बेटियां सरस्वती का मान हैं बेटियां, धरती पर भगवान हैं

विश्व में लिंग चयनात्मक गर्भपात के प्रचलन को जीरो टॉलरेंस पर लाना समय की मांग

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च (गोंदिया): वैश्विक स्तरपर एक ज़माना था जब लिंग भेद अपनी चरम सीमा पर था और दुनियां के अनेक देशों में लिंग चयनात्मक गर्भपात का प्रचलन तेजी से बढ़ा था जिसके कारण लिंग अनुपात में तेजी से डिफरेंस बढ़ता चला गया,इस बीच दुनियां की सरकारें जागी और अनेक ऐसे कार्यक्रम, कानून नियम विनियम,व्यवस्थाएं जन जागरण अभियान चलाए गए जिससे इस कुप्रथा पर नकेल कस्ती चली गई,जो कुछ हद तक इस प्रथा पर नियंत्रण रखनेमें सरकारें कामयाब रही,परंतु फिर भी लिंग भेद की यह प्रथा वैश्विक स्तरपर पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है बल्कि चालू है, पर नियंत्रण में है। इसी क्रम एक दौर भारत में भी एक था,1994 से पहले का जब लिंग चयनात्मक गर्भपात अति तेजी के साथ हुआ था और अधिकतम लोग इस तर्ज पर बेटियों का गर्भ नष्ट कर देते थे, जिसमें स्त्री पुरुष अनुपात में भारी डिफरेंस हो गया इसके पश्चात सरकारें जागी व लिंग चयन प्रतिरोध अधिनियम 1994 बनाया जो 1 जनवरी 1996 को प्रवेश पूर्व निदान तकनीकी (विनियमन व दुरुपयोग निवारण) अधिनियम 1994 लागू किया गया जिसमें 14 फरवरी 2003 को संशोधन कर अधिनियम का नाम गर्भधारण पूर्व और प्रवेश पूर्व निदान तकनीकी (लिंग चयन प्रतिरोध) अधिनियम 1994 रखा गया।बता दें मेरा मानना है कि इस अधिनियम को लाने में देर हो गई थी जिसका परिणाम हम आज हर समाज व धर्म में भुगत रहे हैं क्योंकि,आज 1990 की उम्र के अनेक लड़के अनेक समाजों में हमारे बैठे हैं उस अनुपात में लड़कियां नहीं मिल रही है, क्योंकि आज लड़की वाले एज डिफरेंस की स्थिति को भी देख रहे हैं, इसलिए जो हमने 80- 90 के दशक में स्पीड से लिंग चयनात्मक गर्भपात किए थे उसके परिणाम आज उस उम्र के अनुपात में लड़कियों के नहीं मिलने से हो रहा है, जो मैंने प्रत्यक्ष रूप से इसका सटीक उदाहरण अनेक समाजों में देखा हूं। इसलिए ही भारत में भी राष्ट्रीय बेटी दिवस भी मनाया जाता है।और 22 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय बेटी दिवस भी मनाया जाता हैं अब हंस्ती है बेटियां तो मोती झड़ते हैं,चलती है लहराके तो फूल खिलते हैं। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,विश्व में लिंग चयनात्मक गर्भपात के प्रचलन को जीरो टॉलरेंस पर लाना समय की मांग है, व बेटे को प्राथमिकता देने की परंपराओं को समाप्त कर सभी लिंगों के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देने को प्राथमिकता देना जरूरी है।

साथियों बात अगर करीब करीब अनेकों समाजों की करें तो जहाँ छोटी लड़कियों को अभी भी बोझ और लड़कों की तुलना में कम मूल्यवान माना जाता है। आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के कारण बेटे को प्राथमिकता देना सदियों पुराना विचार है, फिर भी यह आज भी एक वास्तविकता है। भारत और चीन में लिंग-चयनात्मक गर्भपात का प्रचलन है, लेकिन इसे एशिया मध्य पूर्व, पूर्वी यूरोप और अन्य जगहों पर भी

दर्ज किया गया है। इस उत्सव का उद्देश्य लड़कियों से जुड़े कलंक को पहचानना, बेटे को प्राथमिकता देने वाली परंपराओं को खत्म करना और सभी लिंगों के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देना है। डॉटर्स डे दुनियां भर में माता पिता और उनकी बेटियों के बीच अनोखे रिश्ते का सम्मान करने के लिए मनाया जाने वाला एक खास अवसर है।भारत में, परिवार और समाज में बेटियों के प्यार, सम्मान और महत्व को उजागर करता है।

साथियों बात अगर हम बेटियों के प्रति सहानुभूति पूर्वक और उत्साह से जनजागरण के 5 कारणों की करें तो (1) बेटियाँ परिवारों को पोषित करने और मजबूत भावनात्मक बंधन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बेटियों की इस भूमिका का जश्न मनाने और परिवार इकाई में उनके योगदान को पहचानने का एक अवसर है। चाहे वह प्यार, देखभाल या जिम्मेदारी के माध्यम से हो,बेटियाँ एक विशेष ऊर्जा लाती हैं जो पारिवारिक जीवन को समृद्ध बनाती है। (2) इसका एक मुख्य उद्देश्य लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है भारत में, सामाजिक मानदंडों ने अक्सर बेटों को बेटियों की तुलना में अधिक महत्व दिया है, जिससे महत्वपूर्ण लैंगिक असंतुलन पैदा होता है। यह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि बेटियाँ भी उतनी ही मूल्यवान हैं और उन्हें बेटों के समान ही प्यार, शिक्षा और अवसर दिए जाने चाहिए। यह भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण से लड़ने में मदद करता है और लिंग के बावजूद बच्चों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करने के विचार को बढ़ावा देता है। (3) कई क्षेत्रों में, पारंपरिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं ने बेटों को प्राथमिकता दी है, खासकर विरासत और पारिवारिक वंश के संदर्भ में। बेटियों का दिन लड़कियों के महत्व और एक संपूर्ण जीवन के उनके अधिकार पर जोर देकर इन पुरानी मान्यताओं को चुनौती देता है। यह उत्सव परिवारों को अपनी बेटियों को उनके लक्ष्यों और सपनों को प्राप्त करने में सहायता करने के लिए प्रोत्साहित करता है, चाहे वे व्यक्तिगत हों या पेशेवर। (4) बेटियों के प्रति जन जागरण सशक्तिकरण के बारे में भी है। यह माता पिता और अभिभावकों को अपनी बेटियों को यह याद दिलाने का मौका देता है कि वे मजबूत हैं, सक्षम हैं और दुनिया द्वारा दिए जाने वाले हर अवसर की हकदार हैं। बेटियों का दिन मनाकर, माता-पिता अपनी बेटियों में आत्मविश्वास पैदा कर सकते हैं, उन्हें अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं और अपने लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। (5) माता-पिता और बेटी के बीच का रिश्ता अक्सर अपने गहरे भावनात्मक जुड़ाव के लिए संजोया जाता है। बेटियों के प्रति जन जागरण माता पिता को विचारशील इशारों, उपहारों या साथ में गुणवत्तापूर्ण समय बिताने के माध्यम से इस बंधन को मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है। चाहे वह एक साधारण दिल से की गई बातचीत हो, परिवार के साथ बाहर घूमना हो या कोई खास तोहफा हो, यह दिन बेटियों को यह दिखाने का सही अवसर प्रदान करता है कि वे परिवार के लिए कितना महत्त्वपूर्ण मायने रखती हैं।

साथियों बात अगर हम बेटियों के प्रति जन जागरण अभियान की करें तो, दुनियां के कुछ हिस्सों में, लड़के बच्चों को लड़कियों से ज़्यादा महत्व दिया जाता है। यह जन जागरण अभियान लड़के और लड़की दोनों के लिए समान महत्व को बढ़ावा देता है।लड़कियों को शिक्षित किया जा सकता है और उन्हें समान अवसर दिए जाने चाहिए। अपनी बेटी का जश्न मनाएँ। अपनी बेटियों के साथ दिन बिताएँ। उन्हें आपको कुछ ऐसा सिखाने दें जो आप पहले से नहीं जानते। उनकी आकांक्षाओं को सुनें। चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो, इस बात का इंतज़ार करें कि हमारी बेटियाँ हमको कहाँ ले जाएँगी। रोमांच हमारे सामने हैं। उत्सवों की तरह ही हमारी बेटियाँ भी कई तरह के व्यक्तित्वों वाली होती हैं। जहाँ एक साहसी और साहसी होती है, वहीं दूसरी हमें पल भर में मात दे देती है। वे तुरंत हमारा दिल जीत लेती हैं। हमारी सहज प्रवृत्ति हमें उनकी रक्षा करने के लिए कह सकती है। हालाँकि, वे भी उतनी ही दृढ़ता से हमारी रक्षा करेंगी। बेटियाँ दुनिया के किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह ही बढ़ने, सीखने और खोज करने की समान हकदार हैं।

साथियों बात अगर हम बेटियों के बदलते सकारात्मक परिपेक्ष का सटीक उदाहरण दिनांक 19 सितंबर 2024 को राजस्थान में देखने की करें तो, गांव में राजस्थान जल महोत्सव को लेकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया था इसमें मुख्य अथिति के तौर पर कलेक्टर टीना डाबी को आमंत्रित किया गया था, उनके स्वागत के लिए महिला सरपंच ने भाषण तैयार किया था। जब सरपंच नें स्टेज पर आई तो किसी आम राजस्थानी बहू की तरह अपना मुंह ढंके हुए थी। लेकिन घूंघट के पीछे से जब सरपंच ने फर्राटेदार अंग्रेजी बोलना शुरु किया, तो सब हैरान रह गए। घूंघट में आई सरपंच के अंग्रेजी भाषण को सुनकर टीना डाबी भी हैरान रह गईं। पूरी स्पीच के दौरान उनके चेहरे पर स्माइल देखने को मिली। इसके बाद उन्होंने ताली बजाकर सरपंच का हौंसला बढ़ाया। अपनी स्पीच में महिला सरपंच ने जल के संरक्षण और महत्व के बारे में चर्चा की। सरपंच का ये भाषण सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। बता दें, एक समय था जब राजस्थान में महिलाओं को सिर्फ घर का चूल्हा-चौका करने लायक समझा जाता था, जैसे ही बेटी को अक्षर ज्ञान हो जाता था, उसे घर पर बिठा दिया जाता था। अब राजस्थान के कई गांवों में महिला सरपंच बनाई गई हैं।कई गांवों में महिलाएं सरपंच तो बन जाती हैं लेकिन उनके पति ही सारे कामकाज देखते हैं। लेकिन कुछ सरपंच ऐसी भी हैं, जो अपनी काबिलियत से गांव का नक्शा बदल कर रख दे रही हैं। उनकी सूझबूझ और समझदारी की तारीफ गांव वाले ही नहीं, उनसे मिलने वाले अधिकारी भी करते हैं। ऐसी ही एक सरपंच से हाल ही में बाड़मेर की नई कलक्टर टीना डाबी की मुलाकात हुई।एक शिरकत करने टीना डाबी बाड़मेर के जालीपा गांव गई थी,वहां एक ऐसी घटना हुई, जो लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गया।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि -हंसती है जब बेटियां तो मोती झड़ते हैं। लक्ष्मी का वरदान हैं बेटियां, घर की शान है बेटियां सरस्वती का मान हैं बेटियां, धरती पर भगवान हैं।विश्व में लिंग चयनात्मक गर्भपात के प्रचलन को जीरो टॉलरेंस पर लाना समयकी मांग। बेटे को प्राथमिकता देने कीपरंपराओं को समाप्त कर, सभी लिंगों के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देने को प्राथमिकता देना ज़रूरी है।

-संकलनकर्ता लेखक-
क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

हे! नारी

शक्तिहीन नारी नहीं, सूर्य किरण की धूप।
अम्बे चंडी कालिका, गौरी लक्ष्मी रूप।।

गर नारी अपमान हो, भरे देह में क्रोध।
मृत्युदंड साहस रखे, और करें प्रतिशोध।।

पुरुषों सी है योग्यता, उड़ें गगन की ओर।
प्रथम सदा नारी रहे, है जग में यह शोर।।

गंगाजल सा वक्ष हो,ना मलीन ये होय।
सत्य मार्ग चलती रहे, जीवन भर ना रोय।।

हे नारी! चहुं ओर है,तेरा ही गुणगान।
अहम भाव ना पालना, ना खोना सम्मान।।

यश फैले ऐसे सदा, जैसे बहता नीर।
रहे हृदय में सौम्यता, ममता की तस्वीर।।

प्रिया देवांगन "प्रियू"
गरियाबंद, छत्तीसगढ़
कोलफील्ड मीर

सारा सच, दिल्ली वार्ता, हमारी वाणी मंच से संजय वर्मा दृष्टि को लेखन क्षेत्र में छटा स्थान

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: राष्ट्रीय हिन्दी मीडिया मंच "सारा सच" प्रतिवर्ष देश और प्रदेश की विशिष्ठ प्रतिभाओं को राष्ट्रीय प्रतिभा उपलब्धि अवॉर्ड 2021 से सम्मानित करता आरहा है| नई दिल्ली गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया सोशल मीडिया पर सर्वे अनुसार चीफ एडिटर सारा सच (राष्ट्रीय हिंदी समाचार पत्र), दिल्ली वार्ता (राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका), को फाउंडर हिंदी वाणी (हिंदी मासिक पत्रिका) की और से चीफ ऐडमिरर इन चीफ सलीम अहमद सिद्दकी के द्वारा जनवरी में आयोजित प्रतियोगिता में मनावर जिला धार मप्र के संजय वर्मा "दृष्टि" को राष्ट्रीय हिंदी साहित्य की और से योर पेन योर वॉइस साहित्य लेखन क्षेत्र में "यादे" विषय पर उत्कृष्ट लेखन के लिए देश में छटा स्थान प्राप्त किया है| संजय वर्मा "दृष्टि" को (मध्यप्रदेश) में छटा स्थान लेखन क्षेत्र प्राप्त किए जाने पर मंच ने उन्हें विजेता सम्मान से विभूषित किया जाकर मंच उनके उज्वल भविष्य की कामना करता है। संजय वर्मा "दृष्टि" की देश-विदेश की पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है। अबतक 636 सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। इनका नाम वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकार्ड में तीन बार अलग-अलग विधा में दर्ज है। स्टार बुक ऑफ रिकार्ड में नाम दर्ज है।

वास्तविकता और वीडियो

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: "मुझे लगता है भैया! दिल्ली की नई मुख्यमंत्री जो बनी है उनका एक वीडियो इंटरनेट पर काफी वायरल हुआ जा रहा है कि वह कितनी संस्कारी, भारतीय परंपरा के प्रति कितनी समर्पित और युद्ध कला में निपुण होने के साथ-साथ देव भक्ति और स्वामी भक्ति की मिसाल हैं। यह वायरल वीडियो दिल्ली के अधिकारियों और जनता को भयभीत कर रहा है कि इतनी युद्ध पारंगत पराक्रमी उनकी मुख्यमंत्री हैं तो उनका काम करना उतना सहज, सरल नहीं होगा जितना कि सोचा जा रहा है क्योंकि इससे पहले उन्हें छात्र नेता, पार्षद और तोड़फोड़ में प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में आंका जा रहा था। इस वीडियो ने तो लोगों में ऐसा डर पैदा किया है कि अब क्या कहें?"

"छोटू! मुझे लगता है कि टीवी और मोबाइल ज्यादा देखने की वजह से तुम्हारी आंखों की रोशनी कम होती जा रही है और तुम लोगों को जानने पहचानने में भी भूल करने लगे हो। वह पराक्रमी, युद्ध कला पारंगत, सुसंस्कारी और देव भक्ति वाली नारी का नाम पायल जाधव जोगी है, जो दिल्ली के नए मुख्यमंत्री के तेवर से बिल्कुल अलग हैं। इनकी वाचालता, गाली गलौज, अश्लील रूप से टिप्पणी करने में इनका जवाब नहीं। दोनों एक नहीं है। दोनों में जमीन आसमान का फर्क है साथ ही कहीं कोई किसी भी तरह का संबंध नहीं है। मुझे वीडियो देखने के बाद लगा कि हिमाचल प्रदेश की मंडी की सांसद अगर उस स्त्री की युद्ध कला निपुणता को देखती तो उन्हें अवश्य ही मणिकर्णिका में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का रोल देने से स्वयं को रोक नहीं पाती। खैर! तुम सावधानी से दोनों चेहरे देखो और तय करो कि मैंने जो कहा है, वह कहां तक सत्य है?"

"लेकिन भैया! कई कई जगह उसे मुख्यमंत्री बताया जा रहा है जिससे कि भ्रम होना सहज है। मेरा एक संदेह है भैया की आखिर क्यों इस तरह दिखाया जा रहा है और लोगों को डराया जा रहा है, जबकि यथार्थ में वह वह नहीं है?"

"हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं कि हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और यह उसी का एक छोटा सा ट्रेलर था। दिल्ली के वर्तमान मुख्यमंत्री फिलहाल अपने मैसेजेस, ट्वीट्स और इंस्टा में लिखे गए सारे संदेशों को मिटकर अपने आप को स्वच्छ साफ और पाप रहित सिद्ध करने में उतनी ही व्यस्त हैं जितने महाकुंभ में डुबकी लगा लगाकर लोग अपने पाप धोने में मस्त हैं। बड़े भैया और इन मुख्यमंत्री में काफी समानताएं हैं। दोनों अपने वाकचातुर्य या वाचालता, अपनी कार्यशैली में समानताएं रखते हैं। दोनों अपने संस्कारहीन, अश्लील भाषा में विपक्ष को सरेआम वस्त्रहीन करने में महारत हासिल शख्स हैं।"

"भैया! फिर मुझे भ्रम क्यों हुआ? कोई तो कारण होगा?"

"कारण हैं न! जो भी व्हाट्सएप पर या इंस्टा में मिलाया उसे जैसे का तैसा फॉरवर्ड करने का नशा, खुद को ज्ञानी प्रदर्शित करने की खुन्नस। इसमें सच्चाई का पता लगाए बिना ऊल जलूल कूड़ा करकट सारा कुछ डाल देने की ललक ही कारण है।"

"हां भैया। आजकल ऐसी बुरी आदत और खिलंदड़पन सवार है कि लगता है कोई अंधा बेल खेत के फसल में घुस गया।"

डॉ टी महादेव राव
विशाखापटनम (आंध्र प्रदेश)

यूक्रेन में शांति की नई उम्मीद

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: यूक्रेन में जारी युद्ध तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुका है, लेकिन हाल की कूटनीतिक पहलें वैश्विक शांति की नई उम्मीद जगा रही हैं। अमेरिका, यूरोपीय संघ और अन्य प्रमुख देशों ने कीव पहुंचकर शांति वार्ता को गति देने के प्रयास तेज किए हैं।

यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन और आईएमएफ प्रमुख क्रिस्टालिना जॉर्जीवा ने यूक्रेन को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है, जिससे वैश्विक स्तर पर शांति प्रयासों को मजबूती मिली है। संयुक्त राष्ट्र ने रूस से तत्काल सेना हटाने का प्रस्ताव रखा है, जो बातचीत को निर्णायक मोड़ दे सकता है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने भी कूटनीतिक समाधान का समर्थन किया है, जिससे शांति वार्ता को और बल मिल सकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले ही स्पष्ट किया है कि "यह युद्ध का युग नहीं है" और भारत लगातार शांतिपूर्ण समाधान की वकालत कर रहा है। भारत ने यूक्रेन को मानवीय सहायता दी है और रूस के साथ संवाद बनाए रखते हुए संतुलित कूटनीति अपनाई है। स्पष्ट है कि विश्व अब युद्ध की विभीषिका से बाहर निकलकर स्थायी शांति की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। यदि ये प्रयास सफल होते हैं, तो यह न केवल यूक्रेन बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि होगी, जिसमें भारत की संतुलित कूटनीति निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"
बड़वानी (मप्र)

भक्ति भावना अड़ गई

दिखावे, भेड़चाल, आडंबर
के भेंट चढ़ भक्ति भावना अड़ गई है
आस्था जो थी पवित्र, पावन, श्रद्धा,
मन की अनुपम भावना कहाँ हो गयी लुप्त
ईश्वर भी विस्मित है देख
बदला रंग ये भक्ति का,बड़े बड़े बैनर,
पोस्टर,गीत संगीत, मंडलियां,
प्रसिद्ध नामी गायक, गायिकाओं की संगीतमय शाम,
भोजन, पकवान,भंडारे, चढ़ावा
भक्ति भावना अड़ गई है
देख ये भव्यता, साज सज्जा
आडंबर,दिखावा लेकर आस्था
और भगवान का नाम
मंदिर से निकल पूजा पाठ
पहुंच गया बड़े बड़े हॉल, क्लब, पार्क,
होटलों में भक्ति संध्या के नाम से
भक्ति भावना अड़ गई है
चकित, विस्मित, हैरान , परेशान क्या है
ये हो रहा,क्यों ये हो रहा.... सिर्फ वाह वाही,
नाम,शोहरत, पहचान,स्टेटस के लिए
भक्ति भावना अड़ गई है
देख ये दौड़ अंधी भक्ति भी अब दिल से
विनम्रता, मधुरता, पावन, शुद्ध मन , भावना,
दिल से नहीं बस हो रही आस्था बनाम नाम, शान,
रुतबा जितना बड़ा दिखावा उतना बड़ा नाम,
जितना बड़ा चढ़ावा उतनी बड़ी शान पर मूर्ख अज्ञानी नहीं जानते
ईश्वर मन देखते हैं, पुण्य आत्मा, व्यवहार, सच्चाई
न की पाप,छल कपट, दुर्व्यवहार, झूठ, फरेब
भक्ति भावना अड़ गई है
उलझ सच झूठ के फेर में
पर ईश्वर नहीं ये भी परम सत्य है।।

मीनाक्षी सुकुमारन
नोएडा
कोलफील्ड मिरर

महिला सशक्तिकरण के लिए कर्ण पुरस्कार से सम्मानित हुई मुस्कान केशरी

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: सरला श्रीवास सामाजिक सांस्कृतिक शोध संस्थान, मालीघाट, मुजफ्फरपुर में संस्थान की संरक्षक कांता देवी की अध्यक्षता में बैठक रखी गई।

कांता देवी ने बताया कि महिला सशक्तिकरण के लिए कर्ण पुरस्कार से मुस्कान केशरी को सम्मानित होना गर्व की बात हैं। कर्ण पुरस्कार से सम्मानित मुस्कान केशरी ने बताया कि विश्व मातृभाषा दिवस पर भगवान पुस्तकालय, भागलपुर में राष्ट्रीय अंग समागम में देश की विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए विख्यात स्वाधीनता सेनानी, रंगकर्मी और नाटककार वीरेंद्र नारायण के सुपुत्र विजय नारायण सहित कई विद्वान और साहित्यकार के हाथों सम्मान प्रदान किया गया था। समागम का आयोजन अंग जन गण, अंग मदद फाउंडेशन, अंगिका सभा फाउंडेशन और दानवीर कर्ण वेलफेयर फाउंडेशन की ओर से किया गया। अध्यक्षता वरिष्ठ शिक्षाविद और समाज सेवक प्रो रतन मंडल एवं समागम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार प्रसून लतांत ने किया था। सरला श्रीवास सामाजिक सांस्कृतिक शोध संस्थान के संयोजक कठपुतली कलाकार सुनील सरला, सरला श्रीवास युवा मंडल की अध्यक्ष सुमन कुमारी, अमन चिल्ड्रेन स्कूल की प्राचार्य बबीता ठाकुर, लोक गायिका अनीता कुमारी, संजय कुमार, गणेश कुमार, अमित कुमार, राजू कुमार, आदित्य राज, सीमा कुमारी ने विश्व मातृभाषा दिवस पर कर्ण पुरस्कार से सम्मानित होने पर मुस्कान केशरी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए वरिष्ठ पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता एवं संस्कृतिकर्मी प्रसून लतान, आयोजक संस्थान अंग जन गण, अंग मदद फाउंडेशन एवं अंगिका सभा फाउंडेशन का कर्ण पुरस्कार से सम्मानित करने के लिए मुस्कान केशरी ने आभार व्यक्त किया।

शासकीय कर्मचारियों के लिए भगोरिया पर्व पर स्थानीय अवकाश घोषित हो

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में भगोरिया पर्व, मनाया जाता है धार जिले की बात करें तो 7 मार्च से लगने वाले भगोरिया में लगभग 59 हाट लगेंगे।

प्रमुख भगोरिया हेतु जिस दिन जिस गांव में भगोरिया हाट हो उस दिन का स्थानीय अवकाश भी घोषित हो तो पर्व मनाने एवं पर्व देखने हेतु लोक संस्कृति के दर्शन के साथ नृत्य, गीत, संगीत को समझ के साथ पर्व का आनन्द अन्य लोगों एवं जो शासकीय कर्मचारी है विशेषकर उन्हें जिस गांव में भगोरिया हॉट भरता बस उसी जगह का स्थानीय अवकाश घोषित होने पर देखने में शामिल होने का पर्व लाभ मिल सकें।

भगोरिया पर्व प्रेम, प्रकृति, संस्कृति, उमंग उत्साह से भरा नृत्य का मिश्रण भगोरिया की गरिमा मे वासंतिक छटा का ऐसा रंग भरता है की देश ही नहीं अपितु विदेशों से भी इस पर्व को देखने विदेशी लोग आते है। संस्कृति के पारम्परिक गीतों को गाया जाकर माहोल मे एक जोश का वातावरण भरा जाता है। नई दिल्ली में राष्ट्रीय पर्व पर भगोरिया की झांकी भी निकाली जाकर कलाकारों को सम्मानित किया जाता है। भगोरिया पर्व लोक गीतों एवं नृत्य से अपनी लोक संस्कृति को विलुप्त होने से बचाते आ रहे है। इसका हमें गर्व है।

संजय वर्मा "दृष्टि"

सब को लगती है, मेरी बात पढ़ने पर आप को भी लग रही है क्या?

कोलफील्ड मिरर 01 मार्च 2025: अरे लग गई, अरे लग गई, अरे लग गई। अरे भाई साहब किस की लग गई? जों तुम हमारे नेताजी की तरह वादों, घोषणाओं, रेवड़ियों मतदाता को देने के लिए चिल्ला रहें हों? उसको लग गई, इसको लग गई, इनको लग गई, बहुत तगड़ी लग गई, बड़े भयानक तरीके से लग गई, ऐसी लग गई कि, कुछ कह नहीं सकते हैं। कुछ कल्पना नहीं कर सकते हैं। कुछ बता नहीं सकते हैं। ऐसी लागी की वह जीवन भर याद रखेगा।

अरे भाई क्या लग गई? जरा मुझे भी तो बताओ? पहेलियों की तरह मत उलझाओ? उनको कैसे लग गई? इनको कब लगी? क्यों लग गई? सच पूछो तो भैय्या जी राजनीति करने वाले को भी आज़ भी लग रही है। समाजिक क्षेत्र में रहने वाला वो साधारण और असाधारण को हर बात पर लग रही है। आर्थिक रूप से देखा जाए तो लग उन्हें भी बहुत बहुत-बहुत लग रहीं हैं लेकिन, कह नहीं सकते हैं। अपना दर्द किसी को बता नहीं सकते हैं क्योंकि, वह जो लगीं हैं ना ऐसी-ऐसी जगह लगी है उस बारे में चर्चा तक नहीं कर सकते हैं। धार्मिक माहौल में यह कभी भी, किसी भी समय, कहीं पर भी, किसी भी बात पर, किसी को भी लगती रहती है इसके अलावा अन्य क्षेत्र देखें तो वह, वहां अधिक से अधिक संख्या में व्याप्त हों कर अपना असर दिखा रहीं हैं। यह मौसम हों या फिर बेमौसम में लगने वाली चीज है यह कभी भी, किसी भी समय, कहीं पर भी किसी को भी लग सकती है। क़सम से हम क़सम तो दिन भर में कई बार खा जाते हैं जनाब इसे क़सम की तरह खां नहीं सकते हैं। हां, एक बात ज़रूर है यह राजनीति करने वालों के लिए कई तरह की होती है, जैसे कि लाल रंग के लिए, किसी को हरी के लिए, और काली के लिए सच बेधड़क पूछो तो इनका अलग-अलग आकार, रंग, स्वाद, और तीखेपन के आधार पर कई किस्में होती हैं यह छोटी बड़ी होने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की होती है। जैसे जैसे मैं अपनी बात कहता जा रहा हूं वैसे-वैसे मेरी बात में भी आपको कहीं ना कहीं लगती हुई महसूस हो रही है जो तुम्हारे चेहरे पर तांडव मचा रही है और खतरा भी मंडरा ने लग गया है तुम्हारे चेहरे के हाव भाव देखकर मुझे भी ही लगता है असली लग गई है?

अरे कुछ नहीं भाई परेशान मत हो जाना मैं तो बस खेत लगी मिर्ची की बात कर रहा हूं और जिसके खेत में यह लगती है बस उसे नहीं लगती है। इसी बात को मैंने जैसे ही कहा और उनको भी लग गई। उनको मिर्ची लगी तो मैं क्या करूं क्योंकि, अलग अलग राज्यों में अलग-अलग लगती है मेरे कहने का मतलब समझ गए ना समझदार को इशारा काफी है। इतना सुनते ही भाईजान को इतनी ज़ोर से लगीं वह सबको बताते हुए नजर आ रहे हैं। सच पूछो तो मिर्ची ऐसी ही होती है जो सब को लगती है अभी तो आप को लग रही है मेरी बात पढ़ने पर।

प्रकाश हेमावत
टाटा नगर रतलाम